



सत्यमेव जयते



कालिंदी

वार्षिक गृह-पत्रिका

चतुर्थ अंक: 2025

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, केन्द्रीय व्यय (कृषि, खाद्य एवं जल संसाधन),
आठवां व नवां तल, सीएजी एनेक्सी भवन, 10 बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली- 110002



सत्यमेव जयते

कालिंदी

वार्षिक गृह-पत्रिका
चतुर्थ अंक: 2025

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा,
केन्द्रीय व्यय (कृषि, खाद्य एवं जल संसाधन),
आठवां व नवां तल, सीएजी एनेक्सी भवन,
10 बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली- 110002

पत्रिका-परिवार

संरक्षक

सुश्री तान्या सिंह, प्रधान निदेशक

परामर्शदाता

श्री विवेक कुमार भास्कर, निदेशक

संपादक

श्री राज कुमार तिवारी, सहायक निदेशक

सह-संपादक

कुमारी बबीता, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

प्रधान निदेशक का संदेश



प्रिय 'कालिंदी' पाठकों,

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि हमारे कार्यालय की वार्षिक गृह-पत्रिका 'कालिंदी' का चतुर्थ अंक प्रकाशित हो रहा है। यह पत्रिका न केवल हमारे कार्यालय की रचनात्मकता को अभिव्यक्त करने का माध्यम है, बल्कि राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में भी एक प्रभावशाली भूमिका निभा रही है।

हमारे अधिकारी गण और कर्मचारी गण जिस उत्साह से अपनी रचनात्मक प्रतिभा का योगदान दे रहे हैं, वह अत्यंत सराहनीय है। पत्रिका का मूल उद्देश्य हिंदी भाषा के प्रति जागरूकता, प्रोत्साहन और गर्व की भावना को सुदृढ़ करना है।

आशा है कि भविष्य में भी आप सभी इस प्रयास को और समृद्ध बनाएंगे तथा 'कालिंदी' को गुणवत्ता और नवाचार का प्रतीक बनायेंगे।

'कालिंदी' केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक और भाषाई पहचान का प्रतीक है।

मैं पत्रिका की निरंतर प्रगति और सफलता की कामना करती हूँ।

(तान्या सिंह)

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा,
केंद्रीय व्यय (कृषि खाद्य एवं जल संसाधन)
नई दिल्ली

निदेशक का संदेश



प्रिय पाठकों,

मुझे अत्यंत गर्व और प्रसन्नता हो रही है कि राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु कार्यालय द्वारा प्रकाशित हमारी गृह-पत्रिका 'कालिंदी' अपने चतुर्थ अंक के रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत है।

इस अंक में कई महत्वपूर्ण और रोचक विषयों पर लेखों को सम्मिलित किया गया है। हमारी संपादकीय टीम ने सभी लेखकों के विचारों को समेकित कर पत्रिका को पठनीय, रोचक और ज्ञानवर्धक बनाने का पूर्ण प्रयास किया है।

पत्रिका को और भी बेहतर बनाने के लिए हमें आपके सुझावों और सहयोग की सदैव प्रतीक्षा रहेगी, ताकि हम इसे आपकी अपेक्षाओं के अनुरूप निरंतर विकसित कर सकें।

इस अंक में हमने सरकारी योजनाओं, नीतियों और कार्यक्रमों के अतिरिक्त शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, कला, साहित्य एवं सामाजिक विषयों पर भी जानकारी पूर्ण लेखों को स्थान दिया है। हमें पूर्ण विश्वास है कि यह विषय-संग्रह न केवल आपको पसंद आएगा, बल्कि आप इसमें निहित ज्ञान को अपने परिवार और समाज के साथ भी साझा करेंगे।

'कालिंदी' की निरंतर प्रगति के लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं!

विवेक

विवेक कुमार भास्कर

निदेशक (प्रशासन)

संपादक की कलम से...



प्रिय पाठकों,

सप्रेम नमस्कार।

आप सभी को 'कालिंदी' पत्रिका के नवीनतम, चतुर्थ अंक की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं एवं अभिनंदन। सबसे पहले, हम आप सभी पाठकों, लेखकों, सहकर्मियों और शुभचिंतकों के प्रति अपना कोटिशः आभार प्रकट करना चाहते हैं, जिनके उत्साहवर्धन, मार्गदर्शन और सक्रिय सहयोग के कारण यह अंक संभव हो सका।

'कालिंदी' का यह संस्करण न केवल हमारे कार्यालय की रचनात्मक अभिव्यक्ति का प्रतीक है, बल्कि यह राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए हमारे सामूहिक संकल्प का भी एक सशक्त उदाहरण है। यह अंक विविध विषयों से युक्त है। समाज की ज्वलंत समस्याओं से लेकर आत्ममंथन करती रचनाएँ, साहित्यिक विमर्श से लेकर सांस्कृतिक रंगों तक। जो पाठकों को न केवल ज्ञानवर्धन की दिशा में प्रेरित करेगा, बल्कि संवेदनाओं को भी उद्बलित करेगा।

हमारे रचनाकारों ने समसामयिक घटनाओं, पारिवारिक मूल्यों, मानवीय रिश्तों, पर्यावरण, तकनीकी प्रगति और भारतीय संस्कृति की विविधता जैसे विषयों पर अपने विचारों को अत्यंत सजीवता से प्रस्तुत किया है। इस अंक में प्रकाशित कविताएं, लेख, संस्मरण और साक्षात्कार न केवल पठनीय हैं, बल्कि विचारोत्तेजक भी हैं।

'कालिंदी' के माध्यम से हमारा निरंतर प्रयास रहा है कि राजभाषा हिंदी को केवल एक दायित्व नहीं, बल्कि गौरव का विषय बनाया जाए। हमें गर्व है कि हमारे कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारी न केवल प्रशासनिक कार्यों में दक्ष हैं, बल्कि साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अभिरुचियों में भी गहरी रुचि रखते हैं। यही वजह है कि 'कालिंदी' केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि हमारी साझा अभिव्यक्ति, हमारी भावनाओं का दर्पण और हमारी भाषा के प्रति निष्ठा का प्रमाण बन चुकी है।

इस अंक में हमने कार्यालय के भीतर सम्पन्न गतिविधियों, राजभाषा से संबंधित कार्यक्रमों और सांस्कृतिक आयोजनों की झलकियाँ भी प्रस्तुत की हैं, जिससे 'कालिंदी' हमारे कार्यस्थल के भीतर चलने वाले रचनात्मक संवाद का एक संपूर्ण वृत्तांत बन सके।

अंत में, मैं इस अंक की समर्पित संपादकीय टीम, तकनीकी सहयोगियों, लेखकों और उन सभी लोगों का विशेष धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इस यात्रा को संभव बनाया। साथ ही, मैं आप सभी पाठकों से निवेदन करता हूँ कि अपने बहुमूल्य सुझाव और प्रतिक्रियाएँ अवश्य साझा करें-क्योंकि आपकी राय ही हमारी अगली उड़ान का पथ प्रशस्त करती है।

आइए, हम सब मिलकर हिंदी भाषा, साहित्य और संस्कृति के इस सुंदर उत्सव में सहभागी बनें और इसे निरंतर आगे बढ़ाएं।

शुभकामनाओं सहित!

राज कुमार तिवारी

(राज कुमार तिवारी)

सहायक निदेशक

विषय-सूची

क्र.सं.	शीर्षक	रचनाकार (पदनाम)	पृष्ठ सं.
1.	बदलता जीवन	श्री राजकुमार तिवारी, सहायक निदेशक	7-8
2.	हौसला	सुश्री बबीता, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक	9
3.	मेरा खोया बचपन	सुश्री बबीता, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक	9
4.	महिला और समाज	सुश्री बबीता, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक	10-11
5.	सच्चा दोस्त	श्री सुमित कुमार, सहायक पर्यवेक्षक	12
6.	इंतजार	श्री विजय, लेखापरीक्षक	12
7.	ई-पुस्तकें बनाम पारंपरिक पुस्तकें	श्री विजय, लेखापरीक्षक	13-14
8.	दर्पण झूठ न बोले	सुश्री मीना कुमारी, डाटा एंट्री ऑपरेटर	15
9.	मैं हूँ मुस्कान	सुश्री मीना कुमारी, डाटा एंट्री ऑपरेटर	15
10.	श्रेष्ठ विचार	सुश्री मीना कुमारी, डाटा एंट्री ऑपरेटर	16
11.	सफल लोकतंत्र के संचालन में मीडिया की भूमिका	श्री सुमित कुमार, सहायक पर्यवेक्षक	17-18
12.	शहरों में बढ़ता ट्रैफिक-जाम और यातायात प्रबंधन की समस्या	श्री धीरेन्द्र कुमार, सहायक पर्यवेक्षक	19-21
13.	धूप	श्री धीरेन्द्र कुमार, सहायक पर्यवेक्षक	22
14.	पतंग	श्री धीरेन्द्र कुमार, सहायक पर्यवेक्षक	22
15.	राष्ट्र निर्माण में कक्षाओं की भूमिका	श्री अशोक महतो, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	23-24
16.	पर्यावरण प्रेम	श्री अशोक महतो, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	25
17.	मनुष्य स्वतंत्र जन्म लेता है, लेकिन बेड़ियों में बंधा रहता है	श्री सचिन सिवाच, लेखापरीक्षक	26-27
18.	भारत में कठपुतली	सुश्री ज्योति पत्नी श्री प्रवीन, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	28
19.	शूरवीर	हर्षित पुत्री श्री प्रवीन, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	29
20.	कोशिश	हर्षुल पुत्र श्री प्रवीन, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	29
21.	नारी सशक्तिकरण	सुश्री आशा, डाटा एंट्री ऑपरेटर	30-31
22.	साहित्यिक चोरी	श्री शुभम त्यागी, लेखापरीक्षक	32-33

क्र.सं.	शीर्षक	रचनाकार (पदनाम)	पृष्ठ सं.
23.	सवेरा	श्री अमित नागर, आशुलिपिक	34
24.	कविता	निधि (कक्षा-II) (भतीजी श्री विकास, बहु-कार्य कर्मचारी)	34
25.	युवा मांगे जवाब अब	श्री हरि नारायन दीक्षित, डाटा एंट्री ऑपरेटर	35
26.	बिटिया	श्री हरि नारायन दीक्षित, डाटा एंट्री ऑपरेटर	35
27.	आजादी	श्री अमित नागर, आशुलिपिक	36
28.	खुश हूँ	श्री सागर, बहु-कार्य कर्मचारी	36
29.	मैं हूँ हिंदी	श्री सागर, बहु-कार्य कर्मचारी	37
30.	सपने बुनना सीख लो	श्री बृजेश, ड्राइवर	37
31.	जुआ खेल और युवाओं पर इसका प्रभाव	श्री प्रवीण, बहु-कार्य कर्मचारी	38-39
32.	औरों की खातिर	श्री बृजेश, ड्राइवर	40
33.	सोचता हूँ	श्री अजय कुमार चौहान, बहु-कार्य कर्मचारी	40
34.	जिंदगी मुस्कुराने लगी	श्री अजय कुमार चौहान, बहु-कार्य कर्मचारी	41
35.	हृदय स्पर्श करने वाली कविता	श्री प्रवीण, बहु-कार्य कर्मचारी	41
36.	विमान में भोजन	उपमन्यु प्रताप सिंह, लेखापरीक्षक	42-43
37.	समय	शिवम रावत (पुत्र श्री संदीप रावत, आशुलिपिक)	44
38.	जाने क्या हुआ है	श्री संदीप रावत, आशुलिपिक	44
39.	पेन	सुश्री चाँदनी, लेखापरीक्षक	45
40.	पहला कदम जरूरी है	सुश्री प्रीती चौधरी, लेखापरीक्षक	45
41.	हर असमंजस के लिए मुस्कुराहट ही चुनिंदा साधन है।	सुश्री चाँदनी, लेखापरीक्षक	46-47
42.	हौंसला	सुश्री प्रीती चौधरी, लेखापरीक्षक	48
43.	पृथ्वी	अंकिता रावत (पुत्री श्री संदीप रावत, आशुलिपिक)	48
44.	वक्त ही वक्त	सुश्री संगीता, लेखापरीक्षक	49
45.	अंतिम यात्रा का वर्णन	सुश्री संगीता, लेखापरीक्षक	49
46.	वक्त लगता है	सुश्री प्रियांका, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	50
47.	जिंदगी	सुश्री प्रियांका, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	50

बदलता जीवन



श्री राज कुमार तिवारी, सहायक निदेशक

बारिश की पहली बूंद जमीन पर गिरते देखते हुए सहसा ही मन में खयाल आया कि जीवन कितना सुन्दर हो सकता है। हमारे आस-पास अनगिनत ऐसी चीजें हैं जिनसे अबाध और अनवरत सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता रहता है। फिर न जाने क्यों हम नाहक ही ऐसी चीजों में उलझे रहते हैं जिनकी न तो आवश्यकता है और न ही कोई औचित्य। हम सुबह उठते हैं तो हमारे आस-पास बहुत ही खूबसूरत चीजें होती हैं जिनमें खुशियाँ तलाशी जा सकती हैं, लेकिन हम अपने ही बनाए नीरस और निरर्थक झमेलों में ऐसे उलझे हैं कि हमें पता ही नहीं चल पाता कि बेकार की चीजों में उलझकर अनगिनत खूबसूरत चीजों से वंचित रह जाते हैं। आप आज किसी से भी 5 मिनट बात करें तो लोग बताएंगे कि पहले का जमाना कितना अच्छा था, कितने सारे दोस्त हुआ करते थे। जिनके साथ समय का पता ही नहीं चलता था। मेरे मन में सहसा ही यह प्रश्न कौंधता है कि कोई इनसे पूछे कि अब आपको किसने रोका है। अब तो पहले से अधिक सुविधाएँ और अवसर हैं, जहाँ हम औसतन पहले की अपेक्षा सैकड़ों गुना अधिक लोगों से मिलते-जुलते हैं। उदाहरण के लिए पहले हम साइकिल, स्कूटर या बस से यात्रा करते थे तो हमारे पास फिर भी कम लोग होते थे। आज मेट्रो जैसी बहुतायात प्रयोग किये जाने वाले हजारों साधनों के माध्यम से लोगों से हमारा साक्षात्कार होता है। लेकिन हम मोबाइल या अपनी चीजों में इतना उलझे हैं कि हमें पता ही नहीं चलता कि हमारे आसपास भी लोग हैं और हम उनसे बात करना भी उचित नहीं समझते। हमारे जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण समय हमारे कार्यस्थल पर बीतता है, जिसमें अलग-अलग पृष्ठभूमि के लोग होते हैं

जिनसे बहुत कुछ सीखा जा सकता है, लेकिन लोग शायद हिचक या आत्ममुग्धता के कारण एक-दूसरे से घुलने मिलने या मैत्री बढ़ाने की बजाए अनदेखा कर देते हैं। इतना ही नहीं अधिकांश जगह तो कार्मिकों के बीच अघोषित शीत युद्ध सतत जारी रहता है। और यदि किसी से बात करने की कोशिश की जाए तो एक सार्वभौमिक सफाई सुनने को मिलती है कि, “माहौल ठीक नहीं है।”

अब इस ‘यक्ष’ प्रश्न से कौन ही निपट सकता है किन्तु मेरा मानना है कि किसी भी जगह का माहौल व्यक्तियों से ही बनता है और यदि हम ठान लें कि बेहतर माहौल खोजने की बजाय हम ही लोग मिल के माहौल अच्छा बना दें तो हमारे आस पास का वातावरण कितना खुशनुमा हो सकता है।

हम सभी लोग बदलाव की अपेक्षा करते हैं लेकिन ये बदलाव कहाँ से आएगा। शायद हमें ही इस बदलाव की शुरुआत करनी पड़ेगी। और हर नए काम को करने में एक प्रकार की हिचक या संकोच और कई बार तो हमारा अहं आड़े आ जाता है। लेकिन अगर हम आत्मचिंतन करें तो किस बात का अहं?

ईश्वर ने हर किसी को विशेष बनाया है और हर व्यक्ति की एवं वस्तु की अलग-अलग उपयोगिता है। हमें तुलना करने और खामियां खोजने की बजाए एक-दूसरे के प्रति सद्भाव व मैत्री भाव अपना कर शुरुआत करनी पड़ेगी तभी बेहतर समाज या एक बेहतर राष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है। किसी से भी मुस्कुराकर प्यार से बात करने में हमारा कुछ भी नहीं जाता, लेकिन फिर भी हम संकोच या कभी-कभी

आत्ममुग्धता के कारण इन चीजों में भी बहुत कंजूस हो जाते हैं। इसी कारण हम संसार में व्याप्त अच्छी चीजों को शायद नहीं देख पाते हैं। यह संसार किसी का भी स्थायी ठिकाना नहीं है। फिर भी हम न जाने किस गुमान में जी रहे हैं।

आज हर कोई बहुत जल्दी में है, लेकिन जाना कहाँ है शायद किसी को भी नहीं पता। हम सभी को सफल होना है कुछ बेहतर पाना है, लेकिन वह बेहतर क्या है, नहीं पता और कभी रुक के सोचा ही नहीं की जो मिला है या जो हमारे पास है, उसका क्या करना है? क्या जितनी चीजें या जो भी उपलब्धियाँ हमारे पास है अभी हैं, हम उनका क्या भोग कर पा रहे हैं? हमने अपने बुजुर्गों से सुना है कि “बड़े भाग मानुष तन पावा” तो क्या हम इस नीमत को पाकर वाकई में अभीभूत हुए हैं अथवा कुछ और पाने की लालसा या कुछ कम पाने की होड़ से ही कराहने में इतना व्यस्त हैं कि कुछ और देख ही

नहीं पा रहे और अगर कभी कुछ देखने की कोशिश भी करते हैं तो दूसरों में हमें केवल कमियाँ ही दिखाई देती हैं, क्योंकि हमने अपने आस-पास एक अहं रूपी अवरोधन लगा रखा है, जिसके लिए शायद ही एक पंक्ति है, कि

“आईना जब भी उठाया करो, पहले देखो फिर दिखाया करो।”

मेरा आशय यहाँ बस इतना ही है कि अगर दोस्त नहीं है तो बनाए जा सकते हैं। इस पूरी यात्रा में बहुत छोटी-छोटी चीजें हैं जैसे कि किसी का सहयोग मिले तो ‘धन्यवाद’, कभी खुद से कोई गलती हो तो ‘सॉरी’, कभी कुछ बहुत अच्छा लग जाए तो मुस्कुरा कर उसकी प्रशंसा कर दी जाए। ये सभी चीजें मुफ्त हैं फिर भी शायद हम आज ‘हम’ की अवधारणा से ‘मैं’ की यात्रा पथ पर अग्रसर हैं और ‘मैं’ के अलावा कुछ और देख पाना कदाचित संभव प्रतीत नहीं होता।

**“हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है
जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं
की अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है।”**

- मैथिलीशरण गुप्त

हौसला

कुछ रास्ते अभी धुंधले हैं, ये धुंध भी जल्द छट जाएगी।

जिंदगी की इस दौड़भाग में, मुश्किलें भी घट जाएँगी॥

आज जिम्मेदारियों का बोझ थोड़ा ज्यादा ही सही, पर हार मान लेने की आदत कभी हमारी रही नहीं।

इस दौर का भी जवाब हम हँसकर ही देंगे, खुद पर आई मुश्किलों को जीवन की सीख की तरह लेंगे।

राह में पड़े शूलों को भी फूलों के समान लेंगे, फिर वही हौसला दिखाएँगे- अपनी मेहनत से इन शूलों को भी हम फूल बनाएँगे॥ हौसले की उड़ान से वो अनचाहा आसमान भी छू लेंगे,

मुश्किल वक़्त को भी हम कड़ा जवाब देंगे।

सुश्री बबीता, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक



मेरा खोया बचपन

वो सुबह का भूला, शाम को घर वापस आ गया, पर शाम इतनी देरी से हुई, कि वो मेरा बचपन खा गया।

बचपन का वो आंगन अब न रहा, जहां खेला करती थी- वो मैदान सूखा पड़ा है।

बचपन का हर एक गलियारा सूना खड़ा है।

माँ-पापा भी अब बूढ़े हो गए,

उनके खुशहाल चेहरे भी बुढ़ापे में कहीं खो गए।

उनके बुढ़ापे को देख मन और दुखी होता है,

मन में भरते थे जो साहस बचपन से-

वो साहस भी अब धीरे-धीरे ढलता है।

बचपन के वो दिन ही खुशहाल हुआ करते थे,

पर अब वो बचपन भी यूँ ही कहीं मिलता नहीं।

दौड़-भाग के जीवन में वो सुख पहले जैसा खिलता नहीं..

“हमारी देवनागरी दुनिया की सबसे वैज्ञानिक लिपि है।”

- राहुल सांस्कृतयायन



महिला और समाज

सुश्री बबीता, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

इतिहास में महिलाओं के योगदान की गाथाएं उतने जोर शोर से शायद ही बताई गई होंगी, जितनी पुरुषों की बहादुरी और बलिदान की बताई गई हैं। इतिहास भी पुरुषों की ही गाथाओं को सदियों से कहता आया है। यदि देखा जाए तो पुरुषों को समाज में उस बल उस बहादुरी से खड़ी करने वाली स्त्री युगों-युगों से ही अपने बलिदान और कभी न हार मानने वाली परंपरा को निभाती चली आयी हैं, फिर चाहे समाज द्वारा उसे श्रेय दिया गया हो या न दिया गया हो उसने कभी भी स्वयं को किसी प्रशंसा में बांधना उचित नहीं समझा। एक स्त्री का समाज में होना समाज के सौभाग्य को दर्शाता है। भारत जैसे देश में एक बेटी के जन्म से ही उसको देवी का स्थान दिया जाता है वही बेटी बड़ी होने पर किसी घर की लक्ष्मी बन जाती है। पुरुष प्रधान देश में स्त्रियों की दशा हर ओर एक समान नहीं रही, कहीं उसे देवी की तरह पूजा गया तो कहीं उसके साथ अत्याचार किये गये पर इन स्थितियों में भी कभी हार न मानते हुए स्त्री हर बार समाज के उद्धार में पुरुष के साथ कदम-से-कदम मिलाकर खड़ी रही है। महिलाओं के योगदान को चंद शब्दों तक सीमित कर पाना संभव नहीं पर यदि उनके अथक प्रयासों को देखा जाए तो वह देश की आजादी के दौरान भी देखी जा सकती है, जिसमें हर एक आंदोलन में नारी ने अपनी भागीदारी निभाई और अपनी बहादुरी के एक के बाद एक परचम लहराती रहीं। स्त्री के प्रयासों को कुछ शब्दों में पिरोया जाए तो जो शब्द मेरे मन में आए हैं उन्हें अपनी कलम से लिखने का प्रयास कर रही हूँ जो कि इस प्रकार है :-

जिंदगी की दौड़भाग में उसने कभी हार मानी नहीं,

वो नारी अपने दुखों से कभी हारी नहीं।

अंधकार में भी उसने रोशनी करने की ठानी है,
उसके जीवन के संघर्षों को युगों-युगों से ये दुनिया भी
मानी है।

परतंत्र भारत को दिलाने आजादी का स्वाद,

उसने भी किया अथक प्रयास

अंतिम श्वास तक उसने छोड़ी न आस।

उसके अथक प्रयास बने देश का विकास,

मुक्त कर दिया देश को, ब्रिटिशों का बनने से दास

बेटी, बहू, माँ हर रूप में वो भायी है

देश की वो नारी आजादी के लिए माँ दुर्गा का रूप
लेकर आई है।

स्वतंत्रता की लड़ाई में जब पहली बार स्त्रियों को खुलकर अंग्रेजों के विरुद्ध तलवार उठाते देखा गया, तब समाज में विद्यमान इस धारणा का भी अंत हुआ कि स्त्रियाँ केवल चार दीवारी तक ही सीमित रहने वाली हैं। रानी लक्ष्मी बाई, झलकारी बाई, बेगम हजरत महल आदि कई ऐसे उदाहरण भारतीय इतिहास के पन्नों में स्वर्णिम अक्षरों में लिखे गए हैं, जो इनकी बहादुरी की मिसालें आज की स्त्रियों को देती हैं और उन्हें निडर होकर आगे बढ़ने को प्रोत्साहित करती हैं। समाज को सशक्त और स्वतंत्र करवाने में जितना योगदान पुरुषों का रहा है उतना ही स्त्रियों का भी रहा है एक गाड़ी के दो पहियों के समान दोनों ने अपने प्रयासों से पिंजरे में कैद

सभी पंछियों को आजादी का वो आसमान दिया जिसकी कल्पना ही मात्र की जा सकती थी पर कल्पना को हकीकत में बदलने के लिए जो प्रयास किये गये उसे समाज के एक वर्ग तक सीमित नहीं किया जा सकता है। नारी का भी आजादी दिलवाने में उतना ही प्रयास रहा है जितना की पुरुषों का। पुरुष प्रधान देश में नारियों को कोई भी अधिकार बिना संघर्ष के नहीं मिलता हर अधिकार को पाने के लिए स्त्रियों को आन्दोलन करने पड़ते रहे हैं इतिहास गवाह है कि नारी को जो नरक जन्म के बाद पुरुष प्रधान समाज में देखने को मिला वो असहनीय है पर नारी ने उस समाज में भी हर स्थिति का जो जवाब दिया है वो किसी और के लिए दे पाना संभव नहीं था। उस दौर में जो आंदोलन चला वो आगे आने वाली नारी के लिए एक प्रेरणा का स्रोत बना आज की नारी उन नारियों के

संघर्ष से प्रेरित होकर हर क्षेत्र में पुरुषों से बेहतर कर रही है कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं जहाँ नारी ने आज अपनी सफलता के परचम न लहराए हों। नारी को आगे बढ़ाने के लिए उस समाज की आवश्यकता है जो उसे खुद से छोटा या बड़ा न देख के खुद के समान देखे जहाँ नारी को अपने हक के लिए आन्दोलन का सहारा न लेना पड़े, जहाँ नारी का सम्मान देश का परम कर्तव्य हो जहाँ नारी डर कर न रहे, सर उठाकर चलने के लिए उसे संघर्ष न करना पड़े, जहाँ नारी को अपनी पहचान के लिए समाज के खोखले नियमों को न मानना पड़े। तभी समाज तरक्की करेगा तभी समाज सही मायनों में प्रगति करेगा।

**“इस विशाल प्रदेश के हर भाग में शिक्षित-अशिक्षित,
नागरिक और ग्रामीण सभी हिंदी को समझते हैं।”**

- राहुल सांकृत्यायन

सच्चा दोस्त



श्री सुमित कुमार (सहायक पर्यवेक्षक)

जिंदगी का एक अमूल्य उपहार है- सच्चा दोस्त।
मित्रता से जिसकी हृदय में प्रस्फुटित होता है एक
सुखद एहसास।

रोम-रोम पुलकित होकर प्रसन्नता से भर जाता है,
जिसके साथ होने से
जिंदगी का एक अमूल्य उपहार है- सच्चा दोस्त।

कड़कती धूप में सहलाती छाया है- सच्चा दोस्त
निराशा और हताशा में आशा व आत्मविश्वास का
नाम है- सच्चा दोस्त

जीवन के दुर्गम और कठिनतम हालात में अटूट
हौसले, हिम्मत का नाम है- सच्चा दोस्त।

जिंदगी का एक अमूल्य उपहार है- सच्चा दोस्त।

पारिवारिक रिश्तों के समान मूल्यवान होता है- सच्चा
दोस्त।

सच्चा मार्गदर्शक व पथप्रदर्शक होता है- सच्चा
दोस्त।

खून के रिश्तों से बढ़कर मजबूती की पहचान होता
है- सच्चा दोस्त।

जीवन में कभी भी सच्चे दोस्त का साथ न छोड़ना,
बड़ी मुश्किल से जीवन में मिलता है- सच्चा दोस्त
जिंदगी का एक अमूल्य उपहार है- सच्चा दोस्त।

इंतजार



श्री विजय (लेखापरीक्षक)

खोल किवाड़ बैठी है,
वो माँ भी इंतजार में.....

सरहद पर जिसका चिराग शहीद हो गया।

ना मिठाइयों की महक,
ना त्यौहार की खुशी,
ना घर में रौनक,

ना दिये, ना मोमबत्ती।
ना एक चिट्ठी की उम्मीद,
ना एक फोन की लालसा।

आँखों में नमी,
और दिल में तड़प।

“वो आएगा, तो खीर बनाऊँगी
उसे अपने हाथों से खिलाऊँगी”

वो इंतजार भी बस एक ‘याद’ है अब,
वो सुकून, वो चैन बीती बात है अब।

अंतर्मन के इस अँधेरे को

क्या कोई रोशन कर पायेगा.....?

खोल किवाड़ बैठी है,

वो माँ भी इंतजार में.....

क्या कभी उसका बेटा लौट कर आएगा?

क्या कभी उसका बेटा लौट कर आएगा?

ई-पुस्तकें बनाम पारंपरिक पुस्तकें



श्री विजय (लेखापरीक्षक)

मनुष्य के ज्ञान, संवेदना और संस्कृति को अक्षुण्ण रखने के लिए पुस्तकों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रहा है। पुस्तकें मानव सभ्यता के विकास की साक्षी रही हैं। समय के साथ-साथ जब तकनीकी विकास ने अपने पंख फैलाए, तो ज्ञान के इन भंडारों का भी स्वरूप बदलने लगा। आज जहां पारंपरिक मुद्रित पुस्तकों का अपना महत्व है, वहीं ई-पुस्तकों ने भी पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है।

पुस्तकों का महत्व

किसी एकांत क्षण में जब कोई साथ नहीं होता, तो पुस्तकें ही साथी बनती हैं। पुस्तकें मानव जीवन की अमूल्य धरोहर हैं। वे न केवल ज्ञान का भंडार होती हैं, बल्कि विचारों, भावनाओं और अनुभवों का भी दस्तावेज होती हैं। पुस्तकें मनुष्य के व्यक्तित्व निर्माण में, उसकी सोच को परिपक्व करने में तथा सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों को बनाए रखने में मदद करती हैं।

महापुरुषों ने कहा है- “पुस्तकें मानव जीवन की सच्ची मित्र होती हैं।”

ई-पुस्तकें (E-Books) क्या हैं?

ई-पुस्तकें डिजिटल स्वरूप में उपलब्ध पुस्तकें होती हैं, जिन्हें कंप्यूटर, टैबलेट, स्मार्टफोन या किंडल जैसे विशेष उपकरणों पर पढ़ा जा सकता है। इनमें टेक्स्ट, चित्र, ध्वनि और वीडियो का सम्मिलन भी संभव होता है।

ई-बुक्स को इंटरनेट के माध्यम से डाउनलोड किया जा सकता है। इन्हें कभी भी, कहीं भी पढ़ा जा सकता है। उदाहरण: पीडीएफ (PDF) फॉर्मेट, ई-पब (ePub) फॉर्मेट, किंडल फॉर्मेट

पारंपरिक पुस्तकें (Printed Books) क्या हैं?

पारंपरिक पुस्तकें वे पुस्तकें होती हैं, जिन्हें कागज पर मुद्रित किया जाता है। ये प्राचीन काल से लेकर आज तक लोकप्रिय हैं। इनकी खुशबू, पन्ने पलटने का आनंद और स्पर्श का सुख पाठकों को भावनात्मक रूप से जोड़ता है। उदाहरण: उपन्यास, पाठ्य पुस्तकें, धार्मिक ग्रंथ, जीवनी।

ई-पुस्तकों के लाभ

- सुलभता:** ई-पुस्तकें किसी भी समय और किसी भी स्थान पर पढ़ी जा सकती हैं। एक स्मार्टफोन या टैबलेट में हजारों किताबें रखी जा सकती हैं।
- कम खर्च:** ई-बुक्स का मूल्य प्रिंटेड किताबों की तुलना में कम होता है। कुछ ई-बुक्स तो निःशुल्क भी उपलब्ध होती हैं।
- पर्यावरण संरक्षण:** ई-बुक्स के लिए कागज की आवश्यकता नहीं होती, जिससे पेड़ों की कटाई कम होती है और पर्यावरण संरक्षण में मदद मिलती है।
- खोज सुविधा:** ई-बुक्स में किसी शब्द या वाक्यांश को सर्च करना आसान होता है।
- इंटरएक्टिव फॉर्मेट:** कुछ ई-बुक्स में वीडियो, ऑडियो और चित्र जुड़े होते हैं, जिससे पढ़ाई रुचिकर और प्रभावी बनती है।

पारंपरिक पुस्तकों के लाभ

- स्पर्श का सुख:** पारंपरिक किताबों की पन्ने पलटने की अनुभूति और उसकी स्याही और कागज की सुगंध पाठकों को एक अलग आनंद देती है।

2. **आंखों के लिए बेहतर:** प्रिंटेड बुक्स पढ़ने से आंखों पर डिजिटल स्क्रीन्स की तरह दबाव नहीं पड़ता। लंबे समय तक पढ़ने पर भी आंखें थकती नहीं।
3. **संग्रहणीय महत्व:** पारंपरिक किताबें किसी भी पुस्तकालय या व्यक्तिगत संग्रह का हिस्सा होती हैं। कई पुरानी और ऐतिहासिक पुस्तकें धरोहर मानी जाती हैं।
4. **भावनात्मक जुड़ाव:** कई लोग किताबों को उपहार में देते हैं। पुस्तकें भावनाओं को जोड़ने का माध्यम भी होती हैं।
5. **बिजली और इंटरनेट निर्भरता नहीं:** पारंपरिक पुस्तकों को पढ़ने के लिए बिजली, बैटरी या इंटरनेट की आवश्यकता नहीं होती।

तकनीकी युग में ई-पुस्तकों का प्रभाव

आज की पीढ़ी, जो स्मार्टफोन और इंटरनेट से घिरी है, उनके लिए ई-पुस्तकें बेहद सुविधाजनक विकल्प बन चुकी हैं। शैक्षणिक संस्थानों में ई-बुक्स और ऑनलाइन लाइब्रेरी का प्रचलन बढ़ा है। विद्यार्थी, शोधकर्ता और साहित्य प्रेमी ई-पुस्तकों के माध्यम से विश्वभर की पुस्तकों तक आसानी से पहुँच सकते हैं। उदाहरण गूगल बुक्स, किंडल लाइब्रेरी, नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी ऑफ इंडिया।

पारंपरिक पुस्तकों का आज भी महत्व

भले ही तकनीक ने पुस्तक पढ़ने का स्वरूप बदल दिया हो, परंतु पारंपरिक पुस्तकों की महत्ता आज भी बनी हुई है। धार्मिक ग्रंथ, ऐतिहासिक ग्रंथ, और साहित्यिक रचनाएं प्रिंटेड स्वरूप में ही अपनी वास्तविक अनुभूति देती हैं।

कई साहित्य प्रेमी आज भी किताबों को हाथ में लेकर पढ़ने को प्राथमिकता देते हैं। पुस्तकालयों और बुक फेयर में आज भी भीड़ देखी जाती है।

दोनों का सामंजस्य

ई-पुस्तकों और पारंपरिक पुस्तकों को प्रतिस्पर्धी के रूप में नहीं, बल्कि पूरक के रूप में देखा जाना चाहिए। दोनों का अपना स्थान और महत्व है।

- यात्रा में ई-पुस्तकें सुविधाजनक हैं।
- घर में पारंपरिक पुस्तकें पढ़ने का अलग ही आनंद है।
- पढ़ाई के लिए ई-बुक्स से त्वरित जानकारी ली जा सकती है।
- साहित्यिक उपन्यास या कविता संग्रह पारंपरिक पुस्तक से पढ़ना बेहतर होता है।

भविष्य की संभावनाएँ

भविष्य में ई-पुस्तकों का प्रचलन और बढ़ेगा। डिजिटल लाइब्रेरी, ऑडियो बुक्स और इंटरैक्टिव ई-बुक्स नई पीढ़ी को आकर्षित करेंगी। किंतु पारंपरिक पुस्तकों का अस्तित्व भी बना रहेगा, क्योंकि उनका सांस्कृतिक, भावनात्मक और ऐतिहासिक महत्व है।

निष्कर्ष

ई-पुस्तकें और पारंपरिक पुस्तकें दोनों ही ज्ञान, विचार और संस्कृति के संवाहक हैं। जहां ई-पुस्तकें तकनीक के युग में जानकारी को त्वरित और सुलभ बनाती हैं, वहीं पारंपरिक पुस्तकें भावनाओं का स्पर्श और सांस्कृतिक धरोहर का एहसास कराती हैं।

दोनों में से किसी एक को छोड़ना ठीक नहीं होगा। पाठकों को परिस्थितियों और अपनी सुविधा के अनुसार दोनों का उपयोग करना चाहिए।

अंततः कहा जा सकता है कि- “तकनीक चाहे जितनी भी उन्नत हो जाए, परंतु किताबों की महक और पन्नों की सरसराहट का स्थान कोई नहीं ले सकता।”

दर्पण-झूठ न बोले

वाह रे वाह!

तुम हो शीशा, आईना और हो दर्पण।
हर कोई करता है अपने आपको तुम्हारे अर्पण।

वल्लाह! तेरी क्या बात है!

तुमसे तो होती रहती रोज मुलाकात है।

चाहे घर हो या हो कार्यालय,

स्कूल हो कॉलेज हो या हो विश्वविद्यालय।

माल, रेस्टोरेंट, होटल या हो कोई भी दुकान-

सब जगह तू रहता है विद्यमान।

तेरी तारीफ में झुकता है सारा जहान,

ऐ दर्पण! इक तू ही तो है

जो जैसे को वैसा ही

प्रतिबिंब दिखलाता है।

तुमसे तो दिल से जुड़ा हुआ नाता है,

तभी तो तू हर किसी के मन को भाता है।

तेरे आगे हर कोई अपना वक्त बिताता है,

घर से निकलने से पहले, तुमसे हर कोई मिलकर
जाता है।

जब तू देता है इजाजत, तभी वो कहीं जा पाता है।

गर दिख जाए तू कहीं, किसी जगह पर तो हर कोई

रुक-रुककर पहले तुझे निहारता है।

हरकतें हमारी देख-देखकर आईना भी शर्मा जाता
है!!

मैं हूँ मुस्कान



सुश्री मीना कुमारी (डाटा एंट्री ऑपरेटर)

आज मैं मुस्कान के गुणों का करती हूँ बखान,

ये तो ईश्वर का है इक प्यारा-सा वरदान।

इसे तो जाने ही है सारा जहान,

चेहरे की बढ़ा देती है यह शान।

बेजान में भी डाल देती है जान,

कोसों दूर कर देती है थकान।

हर मुश्किल काम कर देती है आसान,

अगर कोई हो इससे अंजान-

तो उससे भी हो जाती है जान-पहचान।

जिसके चेहरे पर होती है भीनी-सी मुस्कान,

दुनिया उस पर हो जाती है कुर्बान।

देखो जी! मैंने तो लिया है यह सब जान,

और अब आप भी लें जरूर मान-

जिससे हो जाए जीवन का कल्याण।

हर दिन अपने चेहरे पर बनाए रखें इक मधुर
मुस्कान,

कि हर कोई आपका ही करता फिरे गुणगान।

और आपका करे तहे-दिल से सम्मान,

मुझ पर होगा बड़ा ही एहसान-

यहाँ तक कि खुदा भी हो जाए मेहरबान।



श्रेष्ठ विचार

सुश्री मीना कुमारी (डाटा एंट्री ऑपरेटर)

1. करोगे मेहनत
तो
इसका मिलेगा फल-
आज नहीं तो मिलेगा कल।
खुशियों के आएं पल,
आगे बढ़ने का मिलेगा बल,
हर समस्या का निकलेगा हल।
2. आदर प्राप्त करने का एकमात्र उपाय यही है-
कि पहले आप दूसरों का आदर करें।
3. आप अपने आप में विशेष हैं,
इसलिए अपने सत्य स्वरूप का आनंद लें।
4. कोई भी कर्म कभी भी बेकार नहीं जाता,
वह सुख-दुःख के रूप में लौटकर वापस आता है।
5. अगर कोई अच्छा इंसान जीवन में आ जाए,
तो
उससे अपना नाता जोड़िए
और
साथ उसका कभी न छोड़िए।
6. आप चाहकर भी अपने लिए लोगों की धारणा को नहीं
बदल सकते, इसलिए सुकून
से अपनी जिन्दगी जिएं और खुश रहें।
7. अच्छा संग आगे बढ़ने का बल और हिम्मत देता है
और
साथ में सच्ची खुशी भी देता है।
8. हमारे विचारों का स्तर ही हमारी निजी प्रसन्नता का स्तर
निर्धारित करता है।
9. जो भी कार्य हाथ में लो,
उसे सच्ची लगन से करो
तो
जीवन में सफलता अवश्य मिलेगी।
10. अपना जीवन ऐसा बनाओ
कि
वह दूसरों के लिए एक मिसाल बन जाए।

“हिंदी का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है।”

– महात्मा गांधी

सफल लोकतंत्र के संचालन में मीडिया की भूमिका



श्री सुमित कुमार (सहायक पर्यवेक्षक)

हमारा देश एक लोकतांत्रिक देश है जिसमें शासन का त्रिस्तरीय ढाँचा है, व्यवस्थापिका, कार्यपालिका तथा न्यायपालिका। इनके अलावा एक और चौथा स्तम्भ है जिसे हम मीडिया के नाम से जानते हैं। मीडिया हमेशा से ही एक स्वस्थ समाज व लोकतंत्र की आधारशिला रहा है। लोकतांत्रिक व्यवस्था के सफल संचालन में मीडिया की भूमिका इसलिए महत्वपूर्ण हो जाती है कि सरकार के उपरोक्त तीनों अंगों कि जवाबदेही व पारदर्शिता स्थापित करने का दायित्व मीडिया के कन्धों पर ही है। हमारे देश में आजादी पूर्व तथा आजादी के बाद से ही मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। स्वतंत्रता पूर्व कई समाचारपत्रों तथा पत्रिकाओं के माध्यम से आम जन को जागरूक करने तथा सूचनाएँ प्रसारित करने का कार्य किया गया। आजादी के बाद मीडिया ने लोकतंत्र को सफल बनाने में मजबूती से अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन किया है। हमारे देश में रेडियो प्रसारण की शुरुआत आजादी से पूर्व 1927 में हुई जिसे बाद में 1957 में आकशवाणी नाम दिया गया। आगे चलकर 1959 में दूरदर्शन की शुरुआत हुई, काफी समय तक प्रिंट मीडिया के ये माध्यम ही सूचना के मुख्य स्रोत बने रहे। धीरे-धीरे वैश्वीकरण के बाद प्राइवेट न्यूज चैनलों की शुरुआत हुई, जिसने सूचनाओं के आदान-प्रदान में क्रांति ही ला दी। पारंपरिक रूप से देखा जाए तो मीडिया के दो रूप हैं:



मीडिया की भूमिका को निम्न बिन्दुओं से समझा जा सकता है:

- 1. खबरों को निष्पक्षता व अपूर्वाग्रह के साथ जनता के सामने पेश करना:** एक उत्तरदायी मीडिया का यह दायित्व बनता है कि वह आम जनता के लिए खबरों को निष्पक्षता व अपूर्वाग्रह के साथ प्रस्तुत करें ताकि आम जनता को यथार्थ सूचनाएँ मिल सकें। अक्सर यह देखने में आता है कि न्यूज चैनलों द्वारा खबरों को किसी एजेंडा के साथ पेश किया जाता है। जिसमें सत्तापक्ष किसी विशेष वर्ग आदि के हित साधने की मिलावट देखी जाती है। उदाहरण के लिए सुशांत का सुसाइड केस जिसमें न्यूज चैनलों द्वारा पता नहीं क्या-क्या निष्कर्ष निकाला गया।
- 2. प्रशासन को पारदर्शिता व जवाबदेह बनाना:** सरकार द्वारा चलायी जा रही योजनाओं को जमीनी स्तर पर वास्तविक कितना अमलीजामा पहनाया जा रहा है तथा प्रशासन पारदर्शिता व जवाबदेहता के साथ अपने कार्यों / योजनाओं को कार्यान्वित कर रहा है। सरकार की योजनाओं तथा कार्यों का समाज के जरूरतमंद तथा अंतिम वर्ग तक लाभ पहुँचें, यह देखना मीडिया का दायित्व है। मीडिया में वह ताकत है जिससे व्यक्ति, संगठन, समुदाय तथा समाज को राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाने में सक्षम है। सरकार कई बार योजनाएँ व कार्यक्रमों को लागू तो कर देती है लेकिन उनकी जानकारी पूर्ण रूप से कार्यान्वय तथा लाभ आम जन तक पहुँच नहीं पाता है।

3. जनता के मुद्दों को प्रशासन के समक्ष रखना: एक उत्तरदायी मीडिया का यह दायित्व बनता है कि वह आम जन के कल्याण से जुड़े मुद्दों व विषयों को प्रशासन के समक्ष रखें जिससे प्रशासन का ध्यान उस तरफ जाए तथा उनसे संबंधित योजनाएँ, कानून आदि बनाकर उनको अमलीजामा पहनाया जा सके। मीडिया व्यवस्था का ऐसा अंग है जो स्वयं चलकर समाज के जरूरतमन्द लोगों तक पहुँचकर उनका मार्गदर्शक बने। आम जन के मुद्दों को पटल पर लाना, उनके खिलाफ किए जा रहे शोषण को प्रशासन के समक्ष लाकर उन्हें न्याय दिलाना, यह एक उत्तरदायी मीडिया का दायित्व है। आम जनता का यह विश्वास होना चाहिए कि मीडिया के माध्यम से उसकी बात सुनी जाएगी तथा उचित समाधान पाने में उनकी मदद की जाएगी।

4. जनता व प्रशासन के मध्य एक सेतु के रूप में कार्य करना: मीडिया आम जनता की आवाज है। यह आम जन व सरकार के मध्य सेतु का कार्य करती है तथा उसमें समरसता व संतुलन बनाए रखना मीडिया का दायित्व है। एक आदर्श व उत्तरदायी मीडिया का यह कार्य है कि वह आम आदमी के प्रतिनिधि के रूप में उसकी समस्याएँ सरकार तक पहुँचाए तथा जनहितैषी नीतियों के निर्माण में मार्गदर्शक तथा सलाहाकार की भूमिका का उचित निर्वहन करें। मीडिया को एक कमेंटेटर की भूमिका में ही अपने आपको सीमित नहीं रखना चाहिए बल्कि कभी-कभी कोच, मैनेजर तथा अम्पायर की भूमिका का भी निर्वहन करना चाहिए।

5. सूचनाओं के कलेक्शन की बजाय सिलेक्शन पर ध्यान: आधुनिक समय सूचना क्रांति का दौर है जिसमें तीव्र गति से सूचनाओं का प्रचार-प्रसार होता है। आधुनिक समय में यह देखने में आता है कि सूचनाओं के

महासमुद्र में न्यूज चैनल, सोशल मीडिया साइट्स आदि खबरों के सिलेक्शन से ज्यादा कलेक्शन पर केन्द्रित है जिसकी वजह से आम जन पर खबरों की बमबारी होती रहती है। उदाहरण के लिए जैसे कोई सिलेब्रिटी अपने कुत्ते के साथ घूमने निकला है/ निकली है तो एक उत्तरदायी मीडिया का यह दायित्व बनता है कि सनसनी की बजाय उचित खबरें आम जन तक पहुँचाएं। गॉसिप की बजाय सकारात्मक सामग्री के प्रस्तुतीकरण पर ध्यान देना चाहिए।

आधुनिक स्वरूप: वर्तमान में यदि हम मीडिया की भूमिका का अवलोकन करें तो अधिकतर न्यूज चैनल खबरों की सटीकता को छोड़कर उनको मिर्च मसाला लगाकर प्रस्तुत करते हैं, ताकि सनसनी पैदा हो सके। अधिकतर न्यूज चैनल सत्तापक्ष की महिमा का गुणगान व राग अलापते नजर आते हैं। सत्तापक्ष की नीतियों/ कार्यक्रमों के प्रशंसा के पुल बांधना ही उनका मुख्य उद्देश्य नजर आता है ताकि उनके हित साधे जा सके। ऐसे मीडिया केंद्र सत्तापक्ष के राजकवि तथा राजदरबारी नजर आते हैं। ऐसे पक्षपातपूर्ण रवैये के कारण हमारे देश के लोकतांत्रिक मूल्यों को ठेस पहुँचती है। आजकल एक-दूसरे से ज्यादा खबरों को दिखाने की होड़ में कई बार अवांछित तथा अप्रासांगिक सूचनाओं को दिखाया जाता है जिनका व्यवहार्यता से कोई लेना-देना नहीं है।

उपसंहार: उपरोक्त बिन्दुओं के अवलोकन से यह स्पष्ट हो जाता है मीडिया की आदर्श भूमिका यह होनी चाहिए कि वह समाज के हितों के लिए सूचनाओं का विशुद्ध रूप से आम जन के सामने प्रस्तुतीकरण करें। मीडिया द्वारा समाज में समरसता और एकता की भावना विकसित की जानी चाहिए। मीडिया की भूमिका उपचारात्मक और सहयोगात्मक होनी चाहिए।

शहरों में बढ़ता ट्रैफिक-जाम और यातायात प्रबंधन की समस्या



श्री धीरेन्द्र कुमार, सहायक पर्यवेक्षक

बड़े शहरों में बढ़ता ट्रैफिक हर किसी के लिए परेशानी बन गया है। जहाँ एक तरफ लोग गाड़ियों की खरीद से अपने आवाजाही को आसान बना रहे हैं। तो वहीं दुनियाभर के हर बड़े शहर में वाहनों की संख्या इतनी ज्यादा हो गई है कि थोड़ी सी दूरी तय करने में भी काफी ज्यादा समय लग जाता है। शहरों में यातायात एक बड़ी समस्या है और इसने लोगों का जीवन बहुत कठिन बना दिया है। जाहिर है, इसका नतीजा गैर-उत्पादक गतिविधियों के रूप में सामने आता है। लोगों को अपने महत्वपूर्ण कामों में देरी का सामना करना पड़ता है। इससे व्यक्तिगत और व्यावसायिक नुकसान भी हो सकता है।

हम सब कभी न कभी ट्रैफिक जाम में फंसे हैं। जाम में अटक जाएं तो लगता है कि ट्रैफिक की लाइट बदल ही नहीं रही है। कई-कई बार मीलों लंबी लाइन लग जाती है। धीमा चलता ट्रैफिक दम घोंटता सा मालूम होता है। मजे की बात है कि रेंगता हुआ ट्रैफिक आज की बेइंतिहा तेज रफ्तार जिंदगी का अटूट हिस्सा बन गया है।

सड़कों पर गाड़ियों की भीड़ दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। ट्रैफिक जाम दूर करने वाले सिस्टम इस भीड़ से निपटने में नाकाम साबित हो रहे हैं। कभी बारिश, कभी कोहरा और कभी बिना वजह ही लगे जाम में लोग घंटों फंसे रहते हैं।

नई सड़कें, बाईपास और फ्लाईओवर बनने के बावजूद, इन गाड़ियों को तेज रफ्तार से चलाने के लिए पर्याप्त जगह नहीं होगी। यानी आने वाले दौर में ट्रैफिक जाम की समस्या और बढ़ेगी।

यातायात के ऐसे कोई नियम नहीं हैं जो हमें बताएँ कि सभी मामलों में हमें किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए

और किस प्रकार का नहीं। परन्तु कुछ मामलों में ऐसे नियम हैं जिनका हम सबको पालन करना चाहिए। इन नियमों का उद्देश्य प्रत्येक के लिए सड़क के यातायात को सुरक्षित बनाना है। आजकल हमारे नगरों और कस्बों की सड़कें यातायात के कारण अत्यधिक व्यस्त होती चली जा रही हैं। दिन में अधिकांश समय तक सड़कें कुछ धीमे तथा कुछ तेज गति के वाहनों से भरी रहती हैं। यदि लोग यातायात के नियमों का उल्लंघन करते हैं, तो देर-सबेर दुर्घटनाएँ हो सकती हैं। पैदल चलने वालों, गाड़ियों और सड़क के प्रत्येक प्रयोगकर्ता के लिए इन नियमों को जानना आवश्यक है।

पैदल चलने वालों के लिए एक महत्वपूर्ण नियम है। यदि फुटपाथ है तो उन्हें फुटपाथ पर चलना चाहिए। जहाँ कोई फुटपाथ नहीं है, वहाँ पर पैदल चलने वालों को सड़क के बायी ओर किनारे-किनारे चलना चाहिए। यदि वे इस नियम का पालन नहीं करते हैं, तो वे अपने और दूसरों के लिए भी खतरा पैदा करेंगे।

एक वाहन चालक पैदल चलने वाले को बचाने के लिए अचानक ही अपने वाहन को मोड़ सकता है और ऐसा करने में वह किसी दूसरे को टक्कर मार सकता है, अपने वाहन पर सन्तुलन खो सकता है और फुटपाथ पर अनेक लोगों को टक्कर मारकर गिरा सकता है।

सभी वाहनों को यथासम्भव अपनी बायी ओर चलना चाहिए और सड़क का दाहिना आधा भाग विपरीत दिशा से आने वाले वाहन के लिए छोड़ देना चाहिए। भारत के समस्त भागों में यातायात का यही नियम प्रचलित है। साइकिल सवारों

को सदैव सड़क के किनारे चलना चाहिए और पैदल यात्रियों अथवा वाहनों के मार्ग में कदापि बाधक नहीं बनना चाहिए। हम अक्सर दो या अधिक साइकिल सवारों को सड़क के बीच में एक-दूसरे के बगल में जाता हुआ देखते हैं, यातायात के नियम इस बात की आज्ञा नहीं देते। जहाँ सड़क बहुत व्यस्त है, वहाँ इससे यातायात में बाधा उत्पन्न होगी और दुर्घटनाएं होंगी। आगे जा रहे वाहन को पार करने का नियम भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है। किसी भी वाहन को दूसरे वाहन से आगे निकलने के लिए दायी ओर से जाना चाहिए अन्यथा वह उस वाहन से टकरा सकता है, जो बायीं ओर रहने का प्रयत्न कर रहा है।

जहाँ सड़कें एक-दूसरे को काटती हैं वहाँ वाहन के पहले निकलने के अधिकार के बारे में भी नियम है। ऐसे स्थानों पर, साधारणतया, एक गोल चक्कर बना रहता है। जो वाहन दायीं ओर से आ रहा है, उसे बायीं ओर से आने वाले वाहन से पहले मार्ग पाने का अधिकार है। यदि प्रत्येक चालक इस नियम का पालन करे तो गोल-चक्करों पर यातायात सुचारु रूप से चलेगा और दुर्घटनाओं से बचा जा सकेगा।

चालकों को सही संकेत देने में कभी भूल नहीं करनी चाहिए, अन्यथा दुर्घटना होने का खतरा बना रहेगा। दाएँ-बाएँ मुड़ने, चाल मन्दी करने और रुकने तथा दूसरी गाड़ियों को आगे निकल जाने देने के संकेत हैं। साइकिल सवार, यह सोचकर कि ये संकेत केवल मोटर चालकों के लिए ही महत्वपूर्ण हैं, प्रायः संकेत देने में लापरवाही करते हैं। परन्तु सड़क का प्रयोग करने वाले सभी व्यक्तियों को, चाहे वे साइकिल सवार हो या मोटरचालक, सही संकेत देने चाहिए, जिससे सड़क पर चलने वाले दूसरे लोग सचेत हो जाएँ। पैदल चलने वालों को भी इन संकेतों का ज्ञान होना चाहिए, जिससे वे यह पता लगा सकें कि सड़क पर चलने वाला वाहन किधर होकर जा रहा है। जब दो मोटर चालक रात्रि के समय विपरीत

दिशाओं से आते हुए अपनी गाड़ियों के प्रकाश को मन्द कर देते हैं तो वे एक-दूसरे के कार्य में सहायक होते हैं।

इस प्रकार के सभी कार्यों में हम अपनी थोड़ी-सी स्वतन्त्रता और सुविधा का त्याग करते हैं जिससे अन्य व्यक्ति अपनी स्वतन्त्रता और सुविधा का आनन्द ले सकें और जीवन सबके लिए सुगमतापूर्वक चल सके।

भारतीय सड़कें विभिन्न प्रकार के वाहनों- कारों, बसों, ट्रकों, कृषि वाहनों (ट्रैक्टर आदि), साइकिल, रिक्शा (तीन पहिया यात्री गाड़ी), मोटरसाइकिल और पैदल चलने वालों के साथ भीड़भाड़ से भरी हुई हैं। यहां तक कि विक्रेताओं और सड़क के किनारे वाले स्टॉलों को भी आसानी से सड़क पर अतिक्रमण करते देखा जा सकता है।

वाहनों और विभिन्न यात्रियों की इतनी विशाल विविधता के साथ, सभी के लिए सुरक्षित पारगमन सुनिश्चित करने के लिए सड़क का उपयोग करते समय विशिष्ट नियमों को डिजाइन करना अनिवार्य हो जाता है। इस प्रकार, ट्रैफिक नियम तस्वीर में आते हैं। वे नियमों और विनियमों का एक समूह हैं, जिनका सड़कों पर उपयोग करते समय पालन किया जाना है।



भारतीय सड़कों पर वाहनों और दैनिक यात्रियों की भीड़ होती है। हमारे राजमार्ग और शहर की सड़कें यातायात की तुलना में बहुत अधिक हैं जो वे वास्तव में डिजाइन किए गए थे। लेकिन, यह केवल हिमशैल का टिप है; मुख्य समस्या एक ही सड़क पर वाहनों की विविधता में है और निश्चित रूप से वे सभी समय पर पहुंचना चाहते हैं।

हमारे पास धीमी गति से चलने वाला ट्रैफिक है जैसे- रिक्शा, कार, बस, ट्रक, साइकिल, मोटरसाइकिल, पैदल यात्री और अक्सर जानवर; सभी एक ही सड़क का उपयोग कर। इसके अलावा, मोटर साइकिल, साइकिल सवार और पैदल यात्री सबसे कमजोर हैं, क्योंकि उन्हें भीड़ और व्यस्त सड़क पर स्पॉट करना मुश्किल है।

सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाने के लिए कई पहल की जा सकती हैं। स्कूलों में सड़क सुरक्षा और नियमों के बारे में शिक्षा प्रदान करने के लिए एक संगठित संरचना प्रदान की जानी चाहिए। स्कूलों और व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में एक विषय के रूप में सड़क सुरक्षा और नियम शुरू किए जा सकते हैं।

जागरूकता बढ़ाने में प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का उपयोग भी महत्वपूर्ण उपकरण हो सकता है। प्रिंट या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से मशहूर हस्तियों द्वारा भेजे गए किसी भी संदेश का लोगों के रवैये पर अधिक प्रभाव पड़ेगा। सड़क सुरक्षा और नियमों पर नए ड्राइविंग लाइसेंस धारकों के लिए एक अनिवार्य प्रशिक्षण सत्र भी जागरूकता बढ़ाने में मदद करेगा।

भारत के प्रमुख शहरों में यातायात एक गंभीर समस्या बनती जा रही है। बढ़ती आबादी और वाहनों की संख्या के साथ ट्रैफिक जाम की स्थिति लगातार बढ़ रही है। ऐसे में आपको ट्रैफिक में वाहन चलाते वक्त कुछ जरूरी बातों का ध्यान रखना चाहिए।

इस दौरान हम अक्सर देखते हैं कि ट्रैफिक में फंसने पर कई ड्राइवर अपना धैर्य खो देते हैं, जिससे की दुर्घटना की संभावना रहती है।

मोबाइल फोन का न करें इस्तेमाल: सबसे पहले याद रखें कि ट्रैफिक में होने पर भी अपना सेल फोन बंद कर दें या उसे साइलेंट मोड पर रखें। साथ ही कार की म्यूजिक की आवाज भी कम रखें।

इससे पीछे आ रही गाड़ियों की आवाज और एंबुलेंस के हॉर्न की आवाज आपको सुनाई देगी और आपका ध्यान नहीं भटकेगा। कभी-कभी अधीर ड्राइवर बहुत तेज और खतरनाक तरीके से गाड़ी चलाते हैं। यह बहुत ही खतरनाक है, इसलिए कोशिश करें कि अपनी नजरें हमेशा सड़क पर रहें। हमेशा सतर्क रहें, गाड़ी चलाते समय अपनी लेन में रहने की कोशिश करें। साथ ही टर्निंग इंडिकेटर चालू रखना बिलकुल न भूलें।

ज्यादा ट्रैफिक वाले सड़कों को करें अवाँइड: यथासंभव ट्रैफिक जाम से मुक्त सड़कों पर यात्रा करने का प्लान बनाएं। इससे आपको अपनी मंजिल तक जल्दी पहुंचने में मदद मिलेगी। ट्रैफिक ब्लॉक पर हमेशा सामने वाले वाहन से सुरक्षित दूरी बनाए रखें।



पतंग

श्री धीरेन्द्र कुमार, सहायक पर्यवेक्षक

तितली से लेकर पर उधार,
मुर्गे की कलगी सिर सवार,
बन्दर की लम्बी लगा पूंछ,
मछली सी करती जल-विहार।
इसकी विचित्र है चाल-ढाल,
है बड़े निराले रंग-ढंग,
उड़ चली गगन छूने पतंग।
रॉकेट से बहुत पुरानी है,
यह नील गगन की रानी है,
सूरज को छूना चाह रही,
हिम्मत वाली सैलानी है।
इसके तन में कितनी फूर्ती,
इसके मन में कितनी उमंग!
उड़ चली गगन छूने पतंग।
बादल से बातें करती है,
बगुलों के साथ विचरती है,
हिरणी सी इन्द्रधनुष वाले,
आँगन में कूदी फिरती है।
कितनी भी ऊंची चढ़ जाए,
फिर भी रहती धरती के संग,
उड़ चली गगन छूने पतंग।

धूप

सुबह सवेरे सोनपरी सी,
घर की छत पर आती धूप
अपनी झोली से किरणों के,
मोती खूब लुटाती धूप।
गाँव-गाँव और गली-गली में,
फूल-फूल और कली-कली में,
ओढ़ चुनरिया रंग बिरंगी,
मंद-मंद मुस्काती धूप।
झाड़ी-झुरमुट नदी रेत में,
खड़ी फसल खलियान खेत में,
बाग-बगीचे ताल-तलैया,
दूर-दूर जाती धूप।
घिरे मस्त बादल कजरारे,
नभ में फिरते पाँव पसारे,
लुका-छिपी का खेल खेलती,
बादल में छिप जाती धूप।
पूरब से पश्चिम तक जाते,
कोमल पग उसके थक जाते,
अलसाई पलकों से आखिर,
संध्या को सो जाती धूप।

राष्ट्र निर्माण में कक्षाओं की भूमिका



श्री अशोक कुमार महतो (व. लेखापरीक्षक)

“एक राष्ट्र का भाग्य उसकी कक्षाओं में आकार लेता है” यह कथन शिक्षा की शक्ति और इसके समाज पर प्रभाव को रेखांकित करता है। कक्षाएँ केवल ज्ञान प्राप्त करने की जगह नहीं हैं, बल्कि वे वह नींव हैं जहाँ से एक देश के भविष्य के नागरिक, नेता और विचारक तैयार होते हैं। शिक्षा के माध्यम से ही एक राष्ट्र की संस्कृति, मूल्य, प्रगति और एकता का निर्माण होता है।

कक्षाएँ वह स्थान हैं जहाँ बच्चे अपने जीवन का पहला औपचारिक पाठ सीखते हैं। यहाँ उन्हें न केवल अक्षरों और संख्याओं का ज्ञान मिलता है, बल्कि जीवन के मूल्य, नैतिकता और सामाजिक जिम्मेदारी भी सिखाई जाती है। एक शिक्षक की भूमिका केवल किताबी ज्ञान देने तक सीमित नहीं होती; वह बच्चों के चरित्र को ढालता है और उन्हें समाज का जिम्मेदार नागरिक बनाता है। उदाहरण के लिए, भारत में स्वतंत्रता संग्राम के दौरान स्कूलों और कॉलेजों ने युवाओं को देशभक्ति और बलिदान का पाठ पढ़ाया, जिसने राष्ट्र की आजादी का मार्ग प्रशस्त किया।

एक राष्ट्र की प्रगति उसके नागरिकों की शिक्षा पर निर्भर करती है। कक्षाओं में दी गई शिक्षा ही यह तय करती है कि देश वैज्ञानिक, तकनीकी, आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में कितना आगे बढ़ेगा। उदाहरण के लिए, जापान और जर्मनी जैसे देशों ने द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अपनी शिक्षा प्रणाली को मजबूत किया और कक्षाओं में नवाचार और मेहनत पर जोर दिया। परिणामस्वरूप, ये देश आज विश्व की अग्रणी अर्थव्यवस्थाएँ हैं। भारत में भी, प्राचीन काल में नालंदा और तक्षशिला जैसे शिक्षण संस्थानों ने देश को ज्ञान का केंद्र बनाया था, जिसका प्रभाव आज भी देखा जा सकता है।

कक्षाएँ केवल तकनीकी ज्ञान ही नहीं, बल्कि नैतिकता और मूल्यों का भी आधार हैं। एक बच्चा जो स्कूल में ईमानदारी, सहयोग और समानता सीखता है, वह बड़ा होकर समाज में इन गुणों को प्रतिबिंबित करता है। यदि कक्षाओं में भेदभाव, स्वार्थ या हिंसा को बढ़ावा मिलता है, तो राष्ट्र का भविष्य भी उसी दिशा में जाएगा। महात्मा गांधी ने कहा था कि “सच्ची शिक्षा वही है जो चरित्र का निर्माण करे।” यह चरित्र ही राष्ट्र की पहचान बनता है। उदाहरण के लिए, यदि एक पीढ़ी को भ्रष्टाचार सामान्य लगने लगे, तो वह देश प्रगति के बजाय पतन की ओर जाएगा।

भारत जैसे विविधता से भरे देश में कक्षाएँ सामाजिक एकता का महत्वपूर्ण साधन हैं। यहाँ विभिन्न धर्मों, जातियों और भाषाओं के बच्चे एक साथ पढ़ते हैं, जिससे उनमें आपसी समझ और भाईचारा विकसित होता है। शिक्षा के माध्यम से ही रूढ़िवादिता, अंधविश्वास और क्षेत्रीयता जैसी बुराइयों को दूर किया जा सकता है। यदि कक्षाओं में बच्चों को एकता और समानता का पाठ पढ़ाया जाए, तो राष्ट्र का भाग्य सौहार्द और सहयोग से आकार लेगा। इसके विपरीत, यदि शिक्षा में संकीर्णता को बढ़ावा मिले, तो समाज खंडित हो सकता है।

कक्षाएँ वह जगह हैं जहाँ भविष्य के नेता तैयार होते हैं। चाहे वह राजनीति, विज्ञान, कला या समाज सेवा का क्षेत्र हो, हर बड़ा व्यक्तित्व अपनी नींव स्कूल से प्राप्त करता है। जवाहरलाल नेहरू, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम और सरदार पटेल जैसे नेताओं ने अपनी शिक्षा से प्रेरणा ली और देश को

नई दिशा दी। कक्षाओं में दी गई शिक्षा ही यह तय करती है कि आने वाली पीढ़ी में कितने लोग देश के लिए सोचेंगे और कितने केवल अपने लिए। एक जागरूक और शिक्षित नेतृत्व ही राष्ट्र को समृद्धि और शक्ति की ओर ले जा सकता है।

हालाँकि कक्षाओं में राष्ट्र का भाग्य बनता है, लेकिन कई चुनौतियाँ भी हैं। भारत में आज भी लाखों बच्चे स्कूल से वंचित हैं, और ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की गुणवत्ता कमजोर है। शिक्षकों की कमी, पुरानी पाठ्यक्रम और संसाधनों का अभाव भी समस्याएँ हैं। इनका समाधान सरकार और समाज दोनों के सहयोग से संभव है। शिक्षा पर अधिक निवेश, शिक्षकों का प्रशिक्षण और तकनीक का उपयोग कक्षाओं को प्रभावी बना सकता है। यदि हर बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले, तो राष्ट्र का भविष्य स्वतः उज्ज्वल होगा।

आज वैश्विक मंच पर भारत की स्थिति उसकी शिक्षा पर निर्भर करती है। कक्षाएँ ही वह जगह हैं जहाँ बच्चे वैश्विक चुनौतियों—जैसे जलवायु परिवर्तन, तकनीकी नवाचार और

आर्थिक प्रतिस्पर्धा—के लिए तैयार होते हैं। यदि भारत की कक्षाएँ बच्चों को आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता और नेतृत्व सिखाएँ, तो यह देश विश्व शक्ति बन सकता है। लेकिन यदि शिक्षा केवल रटने और डिग्री तक सीमित रहे, तो राष्ट्र का भाग्य अधर में लटक जाएगा।

कक्षाएँ वह बीज हैं जहाँ से समाज का वृक्ष उगता है। यहाँ दी गई शिक्षा ही यह तय करती है कि देश प्रगति, एकता और नैतिकता की ओर बढ़ेगा या पतन और विभाजन की ओर। भारत जैसे देश में, जहाँ विविधता और चुनौतियाँ दोनों हैं, कक्षाओं की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। यदि हम अपनी शिक्षा प्रणाली को मजबूत करें और हर बच्चे को सही दिशा दें, तो निश्चित रूप से राष्ट्र का भाग्य उज्ज्वल होगा। यह जिम्मेदारी केवल सरकार की नहीं, बल्कि हर नागरिक की है, क्योंकि कक्षाओं से निकलने वाला प्रकाश ही देश का भविष्य बनाता है।

“उसी दिन मेरा जीवन सफल होगा जिस दिन मैं सभी भारतवासियों के साथ शुद्ध हिंदी में वार्तालाप करूँगा।”

— शारदाचरण मित्र

पर्यावरण-प्रेम



श्री अशोक कुमार महतो (व. लेखापरीक्षक)

सूरज की किरणें चूमें फूलों को,
चाँदनी रातें सजाएँ सपनों को।
पहाड़ खड़े हैं प्रेम के पहरेदार,
हरियाली बिछी है- दिल का आधार।

पंछी उड़ते हैं आकाश में नीला,
प्रेम का रंग है हर पल अनमोला।
झरने की धुन में बस्ती है मिठास,
प्रकृति के साथ है प्यार का विश्वास।

फूलों की खुशबू, मिट्टी का स्पर्श,
हर कण में छुपा है प्रेम का संदेश।
बारिश की बूँदें जब धरती को भिगोएँ,
दिल से दिल तक वो प्रेम बहाएँ।

पेड़ों की जड़ें- गहरी और मजबूत,
प्रेम ऐसा जो कभी न हो रूठ।

हवा में लहराती हर पत्ती नन्ही,
कहती है प्यार की कहानी सच्ची।

धरती माँ की गोद में बसा यह जहाँ,
प्रेम से चलता है इसका कारवाँ।

परिंदों का कलरव, लहरों का शोर,
प्रकृति के संग खिलता है प्यार का जोर।

तो आओ मिलकर इस प्रेम को अपनाएँ,
धरती और दिल को एक रंग में सजाएँ।

प्रकृति से प्यार है जीवन का मोल,
हर साँस में बस्ता है प्रेम अनमोल।



श्री सचिन सिवाच (लेखापरीक्षक)

मनुष्य स्वतंत्र जन्म लेता है, लेकिन बेड़ियों में बंधा रहता है

जीन-जैक रूसो की प्रसिद्ध उक्ति, “मनुष्य जन्म से स्वतंत्र है, और हर जगह वह बंधनों में जकड़ा हुआ है,” मानव अस्तित्व के एक गहरे विरोधाभास को व्यक्त करती है। इस कथन का मूल यह है कि हालांकि मानव जन्म के समय बाहरी बंधनों से मुक्त होता है, समाज उसके ऊपर सीमाओं का एक जाल थोप देता है। ये ‘बंधन’ हमेशा शाब्दिक नहीं होते; ये सामाजिक मानदंडों, कानूनों, आर्थिक व्यवस्थाओं और मनोवैज्ञानिक प्रभावों के रूप में प्रकट होते हैं।

स्वतंत्रता मानव जन्म का एक सहज गुण है। एक नवजात शिशु बिना किसी दायित्व, पूर्वाग्रह, पदानुक्रम या अपेक्षा के इस दुनिया में आता है। हालांकि, यह प्रारंभिक स्वतंत्रता क्षणभंगुर होती है। जन्म के क्षण से ही व्यक्ति समाज के ताने-बाने में बुन जाता है, जो एक परस्पर निर्भरता पर आधारित संरचना है। इस प्रकार, बंधन सूक्ष्म धागों के रूप में शुरू होते हैं—पारिवारिक अपेक्षाएं, सांस्कृतिक मूल्य और सामुदायिक नियम—जो धीरे-धीरे अटूट बंधनों में बदल जाते हैं।

समाज और उसके द्वारा निर्धारित नियमों, परंपराओं और कुरीतियों की बेड़ियाँ मनुष्य की स्वतंत्रता पर अंकुश लगाती हैं। जैसे-जैसे समाज विकसित हुआ, उसमें विभिन्न जातियाँ, धर्म, और वर्ग बन गए, जिनकी वजह से असमानताएँ उत्पन्न हुईं। यह असमानता गरीब और अमीर, सवर्ण और अनुसूचित जाति, और अन्य विभाजन के रूप में सामने आती है। समाज की इन बेड़ियों के कारण, एक व्यक्ति को अपनी पहचान, सम्मान और स्वतंत्रता की लड़ाई लड़नी पड़ती है।

समानता का सिद्धांत, जिसे रूसो ने अपने “सामाजिक अनुबंध” में बताया था, इस बात की पुष्टि करता है कि समाज

में प्रत्येक व्यक्ति को समान अधिकार प्राप्त होना चाहिए। लेकिन वास्तविकता में हम देखते हैं कि समाज में असमानताएँ विद्यमान हैं, और ये असमानताएँ व्यक्ति को उसके अधिकारों से वंचित कर देती हैं।

मनुष्य सिर्फ शारीरिक बेड़ियों से ही नहीं बंधा होता, बल्कि मानसिक बेड़ियाँ भी उसे जकड़ लेती हैं। मानसिक बेड़ियाँ समाज के निर्मित मानदंडों, विचारों और धारणाओं से उत्पन्न होती हैं। एक व्यक्ति समाज में अपनी स्थिति और स्थान को लेकर चिंतित रहता है। उसे हमेशा यह डर सताता है कि वह समाज में कैसे दिखाई देगा और क्या लोग उसकी हरकतों पर नकारात्मक टिप्पणी करेंगे। यह मानसिक दबाव उसे आत्मनिर्भर और स्वतंत्र रूप से सोचने से रोकता है।

मनुष्य की स्वतंत्रता केवल व्यक्तिगत अधिकारों से ही संबंधित नहीं है, बल्कि समाज के प्रति जिम्मेदारी से भी जुड़ी होती है। जब तक एक व्यक्ति अपनी स्वतंत्रता का उपयोग दूसरों के अधिकारों का उल्लंघन करने में नहीं करता, तब तक उसकी स्वतंत्रता को स्वीकार किया जाता है। यह एक संतुलन की आवश्यकता को दर्शाता है, जिसमें व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामाजिक जिम्मेदारी का समन्वय जरूरी है। रूसो ने इस सिद्धांत को बहुत अच्छे तरीके से प्रस्तुत किया था कि स्वतंत्रता का वास्तविक अर्थ केवल व्यक्तिगत सुख और सुख-चौन में नहीं, बल्कि समाज में सामूहिक भलाई और समानता में है।



आर्थिक व्यवस्थाएं एक और परत जोड़ती हैं। आधुनिक समाज में, जीवित रहने के लिए मौद्रिक अर्थव्यवस्था में भागीदारी आवश्यक है। अपनी इच्छानुसार जीने की स्वतंत्रता आजीविका कमाने की आवश्यकता से सीमित हो जाती है। पूंजीवाद, उदाहरण के लिए, अवसरों का वादा करता है, लेकिन अक्सर व्यक्तियों को मजदूरी श्रम, ऋण और उपभोक्तावाद से बांध देता है। कार्ल मार्क्स ने इसे गुलामी का एक रूप माना, जहां सर्वहारा वर्ग उत्पादन के साधनों से बंधा होता है, उनकी स्वायत्तता उन लोगों द्वारा छीन ली जाती है जो पूंजी को नियंत्रित करते हैं। कम कठोर व्यवस्थाओं में भी, शिक्षा, रोजगार या सामाजिक स्थिति के माध्यम से अनुरूप होने का दबाव, सामाजिक अपेक्षाओं से बाहर स्वतंत्र रूप से जीने की क्षमता को सीमित करता है।

स्वतंत्रता और बंधन का यह विरोधाभास अपरिहार्य है। मनुष्य सार रूप में स्वतंत्र पैदा होता है, संभावनाओं का एक कोरा कागज, फिर भी समाज में जीने की क्रिया बलिदान मांगती है। ये बंधन-कानूनी, आर्थिक, सामाजिक-एक बोझ और आवश्यकता दोनों हैं, एक तनाव जो मानव स्थिति को परिभाषित करता है। इनसे पूरी तरह मुक्त होना शायद सभ्यता को ही अस्वीकार करने का मतलब हो, एक विकल्प जो बहुत कम लोग चुन सकते हैं या चुनेंगे। शायद सच्ची स्वतंत्रता इन बंधनों से भागने में नहीं, बल्कि उन्हें समझने, उनके वजन को चुनौती देने और उनकी सीमाओं के भीतर एक जीवन गढ़ने में निहित है। जैसा कि रूसो सुझाते हैं, कार्य बंधनों को समाप्त करना नहीं, बल्कि यह सुनिश्चित करना है कि वे न्यायपूर्ण हों, ताकि मनुष्य, भले ही बंधा हुआ हो, फिर भी सिर ऊंचा रख सके।

“मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूँ पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं सह नहीं सकता।”

- आचार्य विनोबा भावे



**सुश्री ज्योति (पत्नी श्री प्रवीन)
वरिष्ठ लेखापरीक्षक (AMG-I)**

भारत में कठपुतली

कठपुतली मनुष्य के सबसे उल्लेखनीय और सरल आविष्कारों में से एक है। ऐसा कहा जाता है कि कठपुतली को अपने जीवित समकक्ष से कहीं अधिक होना चाहिए क्योंकि कठपुतली में निश्चित रूप से वह विचारोत्तेजक तत्व होता है जो अधिक आकर्षक और स्थायी होता है।

कठपुतलियों की कहानी विभिन्न रूपों में मिलती है, लेकिन मूल रूप से कठपुतलियाँ, जो कि नियंत्रित की जाने वाली पुतलियाँ हैं, एक पारंपरिक मनोरंजन का रूप हैं। ये पुतलियाँ विभिन्न कहानियों को व्यक्त करने के लिए इस्तेमाल की जाती हैं, और अक्सर लोक कथाओं और किंवदंतियों को चित्रित करती हैं।

कठपुतली शब्द का अर्थ है 'काठ' या लकड़ी और 'पुतली' या खिलौना।

भारतवर्ष में रंगमंच कला का एक महत्वपूर्ण हिस्सा कठपुतली है, जो देशभर में अपनी विविधता और स्थानीय परम्पराओं के लिए प्रसिद्ध है।

राजस्थान की कठपुतली:

राजस्थान में कठपुतली की एक प्रसिद्ध परम्परा है। यहाँ की कठपुतलियाँ विविध रंगों में चित्रित होती हैं और मुख्य रूप से लकड़ी की बनी होती हैं। नाम और महत्व के अनुसार इनके किरदारों को अलग-अलग वेशभूषाओं से अनलंकृत किया जाता है। इन कठपुतलियों में राजपूताना परम्पराओं और कथाओं का प्रभाव दिखता है। इन्हें धागा या तार के माध्यम से अंगुलियों द्वारा नृत्य और अभिनय करवाया जाता है। रंगमंच पर गीत-राग की कथाएँ भी प्रस्तुत की जाती हैं।

उत्तर प्रदेश की कठपुतली:

उत्तर प्रदेश की कठपुतलियाँ भी प्रसिद्ध हैं। विशेष रूप से यहाँ

की गुलाबो-सिताबो नामक कठपुतलियाँ काफी लोकप्रिय हैं। उत्तर प्रदेश की कठपुतलियाँ प्रायः सूफी लेखों से सुशोभित होती हैं। ये विभिन्न सामाजिक, परंपरागत और ऐतिहासिक कथाओं को दर्शाने का माध्यम बनती हैं।

ओडिशा की कठपुतली:

यहाँ की कठपुतली-कला का आधार ओडिसी नृत्य-संगीत और विषय आदिवासी कथाएँ हैं। यहाँ की कठपुतलियाँ आदिवासी कलाकारों द्वारा बारीकी से बनाई जाती हैं और ये अपनी कथाओं को जीवंत करने के लिए भी जानी जाती हैं। यहाँ की छाया कठपुतली काफी लोकप्रिय है। यह चपटी होती है और चमड़े से बनाई जाती है।

मध्य प्रदेश की कठपुतली:

मध्य प्रदेश में कठपुतली की एक मशहूर परंपरा है। इनके माध्यम से विभिन्न प्रकार की कथाओं, कहानियों और गीतों का मंचन किया जाता है। यहाँ की कठपुतली नृत्य सामाजिक, परंपरागत और ऐतिहासिक कथाओं को दर्शाने का माध्यम भी है। इनमें विभिन्न ऐतिहासिक घटनाओं, राजनीतिक युद्धों, सम्राटों और योद्धाओं की कथाएँ शामिल होती हैं। इन कथाओं के माध्यम से इतिहास के महत्वपूर्ण पहलू और संदेश बच्चों को बताएँ जाते हैं। कठपुतलियों के माध्यम से पुराणों की कथाएँ भी प्रस्तुत की जाती हैं।

कठपुतलियाँ एक प्राचीन और बहुमुखी कला रूप हैं, जो दुनिया भर में लोगों के लिए मनोरंजन और शिक्षा का स्रोत रही हैं।

शूरवीर



हर्षित (कक्षा-IV)

पुत्र श्री प्रवीन (वरिष्ठ लेखापरीक्षक)

सच है- विपत्ति जब आती है,
कायर को ही दहलाती है।
सुरमा नहीं विचलित होते,
क्षण एक नहीं धीरज खोते।

विघ्नों को गले लगाते हैं।

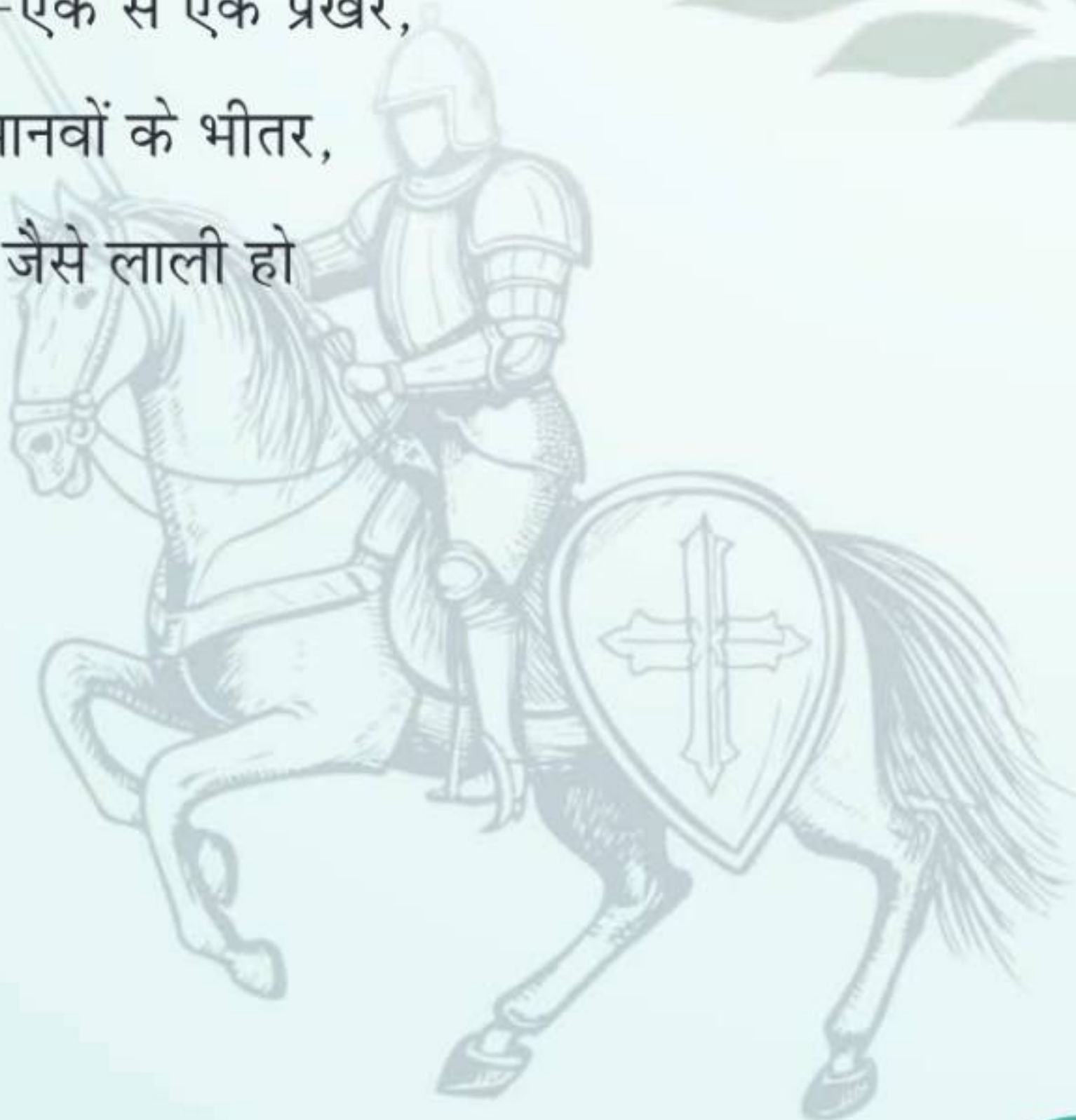
काँटों में राह बनाते हैं।

है कौन विघ्न ऐसा जग में
टिक सके आदमी के मग में?
खम ठोंक ठेलता है जब नर,
पर्वत के जाते पाँव उखड़।

मानव जब जोर लगाता है,

पत्थर पानी बन जाता है।

गुण बड़े-एक से एक प्रखर,
है छिपे मानवों के भीतर,
मेहंदी में जैसे लाली हो



कोशिश



हर्षुल (कक्षा-V)

पुत्री श्री प्रवीन (वरिष्ठ लेखापरीक्षक)

करे कोशिश अगर इंसान तो क्या-क्या नहीं मिलता।

वह उठकर चल के तो देखे, जिसे रस्ता नहीं मिलता।

भले ही धूप हो, काँटे हों, पर चलना ही पड़ता है,

किसी प्यासे को घर बैठे कभी दरिया नहीं मिलता।

कहें क्या ऐसे लोगों से जो कहकर लड़खड़ाते हैं-

कि "हम आकाश छू लेते मगर मौका नहीं मिलता।"

कमी कुछ चाल में होगी, कमी होगी इरादों में,

जो कहते हैं "कामयाबी का हमें नक्शा नहीं मिलता।"

अपने आप पर यारों, भरोसा करके तो देखे,

कभी भी गिड़गिड़ाने से कोई रुतबा नहीं मिलता।





सुश्री आशा (डी.ई.ओ.)

नारी सशक्तिकरण

नारी सशक्तिकरण का मतलब है महिलाओं को उनकी पूरी क्षमता तक पहुंचने के अवसर प्रदान करना, ताकि वे समाज में समान अधिकार और सम्मान प्राप्त कर सकें। यह केवल एक नारा नहीं, बल्कि एक आंदोलन है, जो महिलाओं को उनकी शक्तियों का एहसास कराता है और उन्हें जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

आज की महिलाएं जीवन के हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही हैं। चाहे शिक्षा हो, विज्ञान हो, राजनीति हो या खेल-हर जगह महिलाओं ने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। लेकिन यह भी सच है कि समाज के कई हिस्सों में महिलाओं को अभी भी भेदभाव और हिंसा का सामना करना पड़ता है। इस स्थिति को बदलने के लिए महिलाओं को शिक्षित और आत्मनिर्भर बनाना बेहद जरूरी है।

महिलाओं को सपने देखने की आजादी देना उनके सशक्तिकरण की पहली सीढ़ी है। एक शिक्षित महिला, सिर्फ अपने जीवन को ही नहीं बल्कि अगली पीढ़ी को भी बदलने की ताकत रखती है। जब महिलाएं अपनी आवाज उठाती हैं, तो पूरे समाज को जागरूक करती हैं। नारी सशक्तिकरण सिर्फ महिलाओं की मदद करना नहीं, बल्कि पूरे समाज को प्रगति की ओर ले जाने का कदम है।

नारी सशक्तिकरण के बिना किसी भी समाज या देश का विकास अधूरा है। जब एक महिला आत्मनिर्भर होती है, तो वह अपने परिवार को नई दिशा देती है। यह परिवार से लेकर पूरे समाज तक बदलाव की लहर बन जाती है।

जरूरत है कि हम हर महिला को उसकी क्षमताओं का एहसास कराएं, उसे आगे बढ़ने के मौके दें और यह सुनिश्चित

करें कि वह अपने सपनों को पूरा कर सके। नारी का सशक्त होना सिर्फ उसका हक नहीं, बल्कि एक मजबूत समाज की नींव है। आइए, इसे मिलकर मजबूत करें।

“यदि आप एक पुरुष को शिक्षित करते हैं, तो आप केवल एक व्यक्ति को शिक्षित करते हैं; लेकिन यदि आप एक महिला को शिक्षित करते हैं, तो आप एक पूरे परिवार को शिक्षित करते हैं।” यह पंक्ति नारी सशक्तिकरण के महत्व को बखूबी दर्शाती है।

नारी सशक्तिकरण का अर्थ है महिलाओं को उनकी क्षमताओं को पहचानने, अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने, और अपने जीवन को अपनी शर्तों पर जीने की स्वतंत्रता देना। इतिहास गवाह है कि जब महिलाओं को अवसर दिए गए, उन्होंने हर क्षेत्र में उत्कृष्टता हासिल की। चाहे झांसी की रानी लक्ष्मीबाई का साहस हो, कल्पना चावला की ऊंची उड़ान हो, या मैरी कॉम का खेल कौशल-हर जगह महिलाओं ने अपनी पहचान बनाई।



वर्तमान समय में नारी सशक्तिकरण की आवश्यकता

पूरे इतिहास में, दुनिया भर में महिलाओं ने आज अपनी स्थिति हासिल करने के लिए दुर्व्यवहार के खिलाफ लड़ाई लड़ी है। पश्चिमी देशों में प्रगति में सशक्त महिलाओं की भागीदारी को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। भारतीय इतिहास में भी नारियों की अहम भूमिका रही है। लेकिन वर्तमान समय में भारत और कई देश अभी भी महिलाओं को सशक्त बनाने में पीछे हैं।

ऑनर किलिंग जैसी प्रथाओं के कारण सुरक्षा संबंधी चिंताएँ व्याप्त हैं, जहाँ परिवारों का मानना है कि महिलाओं की प्रतिष्ठा को धूमिल करने के लिए उन्हें नुकसान पहुँचाना स्वीकार किया जाता है। प्रतिबंधों से भरे सामाजिक मानदंड महिलाओं की शिक्षा और स्वतंत्रता को सीमित करते हैं। जिससे अक्सर कम उम्र में विवाह और पुरुष के वर्चस्व को बढ़ावा दिया जाता है। घरेलू हिंसा एक और अहम मुद्दा है। समाज में ये अवधारणाएँ भी हैं की महिलाएँ महज संपत्ति हैं। इसके अलावा दफ्तरों पर लिंग को लेकर भेदभाव बरकरार है, महिलाओं को अक्सर समान काम के लिए कम वेतन मिलता है।

महिलाओं को बोलने और अन्याय के खिलाफ लड़ने के लिए सशक्त बनाना महत्वपूर्ण है। यह दबाव बनाने वाली प्रथाओं को खत्म करने और सभी लिंगों के लिए समान अधिकार और अवसर सुनिश्चित करने का समय है।

देश की महिलाओं को सशक्त कैसे बनाएं

महिलाओं को सशक्त बनाने के कई तरीके हैं और इसके लिए व्यक्तियों और सरकार दोनों के प्रयासों की आवश्यकता

है। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, लड़कियों की शिक्षा यह सुनिश्चित करने के लिए अनिवार्य होनी चाहिए कि उन्हें अपना जीवन बनाने के लिए ज्ञान प्राप्त हो।

लिंग की परवाह किए बिना सभी के लिए समान अवसर आवश्यक हैं, जिसमें समान कार्य के लिए उचित वेतन भी शामिल है। लड़कियों को सशक्त बनाने और उन्हें अपनी आकांक्षाओं को आगे बढ़ाने की अनुमति देने के लिए बाल विवाह को समाप्त करना महत्वपूर्ण है।

महिलाओं को वित्तीय रूप से स्वतंत्रता के लिए कौशल सिखाने के लिए कार्यक्रम उपलब्ध होने चाहिए, जिससे उन्हें किसी भी आर्थिक समस्या से निपटने में मदद मिल सके।

महिलाओं को सामाजिक फैसले के डर के बिना अपमानजनक रिश्तों को छोड़ने में सुरक्षित महसूस करना चाहिए। माता-पिता को अपनी बेटियों को सिखाना चाहिए कि खतरनाक स्थिति को किस प्रकार से सुलझाया जाए।

महिलाओं को सशक्त बनाना न केवल एक नैतिक अनिवार्यता है बल्कि सामाजिक प्रगति और समानता के लिए भी एक आवश्यकता है। शिक्षा, समान अवसर और सहायता प्रणालियों तक पहुंच सुनिश्चित करके, हम महिलाओं की सहायता कर सकते हैं। हम सभी के लिए अधिक समावेशी और न्यायपूर्ण समाज बना सकते हैं। महिलाओं के लिए यह बाधाओं को तोड़ने, रूढ़िवादिता को चुनौती देने और हर जगह अधिकारों की बात करने का समय है। आइए हम सब मिलकर एक ऐसी दुनिया की ओर प्रयास करें जहाँ हर महिला के पास अपनी किस्मत खुद बनाने और मानवता की भलाई में योगदान करने की शक्ति हो।



श्री शुभम त्यागी (लेखापरीक्षक)

साहित्यिक चोरी

साहित्यिक चोरी का आशय किसी अन्य व्यक्ति द्वारा किए गए कार्यों, विचारों शैली आदि को नकल करके अपनी मौलिक रचना के रूप में प्रकाशित करना है।

क्या?

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय और हावर्ड विश्वविद्यालय तीनों साहित्यिक चोरी की परिभाषा पर एक मत है साहित्यिक चोरी उस समय मानी जाती है, जब हम किसी के द्वारा रचित साहित्य को श्रेय दिए बिना अपने नाम से प्रकाशित करवा लेते हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि स्रोत कोई प्रकाशित लेखक है या कोई छात्र है या कोई वेबसाइट है या कोई कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI, ChatGPT, Large Language Model) जिसका स्पष्ट लेखकत्व नहीं है। साहित्यिक चोरी बौद्धिक संपदा की चोरी है। साहित्यिक चोरी सभी प्रकार की पांडुलिपियों, चलचित्र या डिजिटल सूचना पर लागू होती है। जिसमें शोध लेख, शोध, निबंध, कविता, पुस्तक प्रकाशन, पुस्तक का कोई अध्याय और इसी प्रकार का मूल्यांकन कार्य जो किसी कार्यालय के कर्मचारियों द्वारा कार्यालय पत्रिका में लेख या अन्य उद्देश्यों हेतु तैयार किया जाता है। इसके अन्तर्गत आवधिक पत्र, परियोजना प्रतिवेदन, पाठ्यक्रम संबंधी कार्य व निबंध तथा उत्तर पुस्तिकाओं को शामिल नहीं किया जाता है। साथ ही साहित्यिक चोरी केवल लिखित रूप में ही नहीं होती है। यह बौद्धिक सम्पदा जैसे- संगीत, चित्र, चलचित्र और यहाँ तक की किसी नृत्य की नृत्यकला पर भी लागू होती है।

क्यों?

महत्वाकांक्षा, तथ्यों की कमी, धन का लालच, बुद्धि पतन, वैचारिक बाधाएं, आलस्य, समय सीमा का दबाव, दिखावा इत्यादि कही ना कही साहित्यिक चोरी के पीछे का कारण है।

कैसे?

आज का समय डिजिटल होने के कारण कोई भी बहुत ही आसानी से साहित्यिक चोरी कर सकता है। सर्च इंजन की मदद से किसी भी लेख के शब्दों को उनके समानार्थक पर्यायवाची शब्दों में बदल कर (जिससे कि सर्च इंजन इस चोरी ना पकड़ सके) साहित्यिक चोरी की जा सकती है और तो और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) की मदद से इस चोरी को और भी सम्मोहक बना दिया है जहां पर आप एक पूरा लेख भी लिखवा सकते हैं या कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) से किसी के भी लेख में कुछ फेर बदल कर के एक नया लेख लाया जा सकता है।

आने वाले समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) भी साहित्यिक चोरी में शामिल होगा क्योंकि ओपन सोर्स लार्ज लैंग्वेज मॉडेल्स (LLM) को कोई भी, किसी भी या कैसे भी डाटा पर प्रशिक्षित किया जा सकता है चाहे वो डाटा अवैध रूप से ही क्यों ना हासिल किया गया हो। जैसा की मेटा कंपनी द्वारा बनाया गया कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) एजेंट लामा (Llama) जिसको प्रशिक्षित के लिए स्पइहमद (साहित्यिक चोरी का डेटाबेस) का सहारा लिया गया था। जैसा की आजकल कार्यालय के कर्मचारियों द्वारा अपने कार्यालय पत्रिका में लेख दिए जा रहे हैं।

यह गलत क्यों है

साहित्यिक चोरी नैतिकता और विश्वसनीयता के पतन का प्रतीक है जहां ऐसा लेख छापा हो उस संस्था, पत्रिका या शोध पत्र और उसके संपादक की विश्वसनीयता को मिट्टी में मिलने में किए गए कार्यों में से एक है। साहित्यिक चोरी द्वारा किए गया लेख ना ही प्रौद्योगिकी के क्षेत्र, अर्थव्यवस्था के क्षेत्र, और ना ही कला के क्षेत्र में कोई विकास नहीं कर पाते। साहित्यिक चोरी सबसे मूर्खता पूर्ण किए गए कार्यों में से एक है, एक तरफ लेखक को लगता है ये किसी को भी नहीं पता लगेगा परंतु वास्तव में वो खुद को धोखा दे रहे होते हैं क्योंकि आज की प्रौद्योगिकी की मदद से साहित्यिक चोरी को और भी आसानी से पकड़ा जा सकता है

कैसे बचे

साहित्यिक चोरी सभी स्थितियों में अस्वीकार्य है, चाहे आप इसे जानबूझकर करें या गलती से करें और इससे बचने की सबसे बड़ी कुंजी है ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और बुद्धिमत्ता। जिस पत्रिका या शोध पत्र में ऐसा साहित्य छापा हो उसके संपादक को चाहिए ही ऐसा लेख अपनी पत्रिका से हटाए और लेख चोरी करने वाले पर अनुशासनात्मक कार्यवाही करें जैसे की सार्वजनिक माफी या कोई आर्थिक दंड और पत्रिका के अगले अंक में अपने पाठक को सूचित करें, अन्यथा ऐसी संस्था अपनी विश्वसनीयता पर लगी चोट की कीमत अदा

करते हैं क्योंकि एक बार आपकी विश्वसनीयता गई तो वो इसे वापस नहीं पा सकते।

साहित्यिक चोरी को रोकने के लिए भारत सरकार द्वारा 2018 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (उच्चतर शिक्षा संस्थानों में अकादमिक सत्यनिष्ठा एवं साहित्यिक चोरी की रोकथाम को प्रोत्साहन) विनियम लाया गया था जिसका उद्देश्य अकादमिक और उच्चतर शिक्षा संस्थानों में साहित्यिक चोरी को रोकना व दंडित करना है।

निष्कर्ष

किसी दूसरे की भाषा, विचार, उपाय, लेख, शैली आदि की नकल करते हुए बिना श्रेय दिए अपने मौलिक कृति के रूप में प्रकाशन करना साहित्यिक चोरी होती है। इस प्रकार से लिया गया साहित्य अनैतिक है और इसे साहित्यिक चोरी की संज्ञा दी गई है। साहित्यिक चोरी के मामलों में यूजीसी के नियमों को कठोर किया गया है। वर्तमान समय में जब सूचना प्रौद्योगिकी का विस्तार तेजी से हुआ है और सम्पूर्ण विश्व एक 'ग्लोबल विलेज' में परिवर्तित होने को तैयार है। ऐसी परिस्थिति में साहित्यिक चोरी को आसानी से पकड़ा जा सकता है।

“मौलिकता अनिर्धारित साहित्यिक चोरी है”

– William Ralph Inge

“यद्यपि मैं उन लोगों में से हूँ, जो चाहते हैं और
जिनका विचार है कि हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है।”

– लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

सवेरा



श्री अमित नागर (आशुलिपिक)

सूरज निकला हुआ सवेरा,
चिड़ियों ने किया बसेरा।
कूद रही है डाल-डाल पर
चहचा रही है, पात-पात पर।
देखो सूरज निकल गया है,
अंधकार अब हट गया है।
कलियों ने अब आँखे खोली,
तुम भी अब, आँखे खोलो।



कविता



निधि (कक्षा-II)

(भतीजी श्री विकास, बहु कार्य कर्मचारी)

जिसने सूरज चाँद बनाया
जिसने तारों को चमकाया
जिसने फूलों को महकाया
जिसने चिड़ियों को चहकाया
जिसने सारा जगत बनाया,
हम उस ईश्वर के गुण गाएँ।
उसे प्रेम से शीश झुकाए।

युवा मांगे जवाब अब

बिटिया



श्री हरि नारायण (डी.ई.ओ.)

भर्ती निकले तो इम्तिहान नहीं
परीक्षा हो तो परिणाम नहीं
परिणाम निकले तो जोड़िंग का नाम नहीं-
आखिर क्यों युवाओं का सम्मान नहीं?

बस करो मज़ाक अब,
युवा मांगे हिसाब अब।
बात करो, संवाद करो,
दो हमारे प्रश्नों का जवाब अब।
क्यों हर भर्ती पंचवर्षीय योजना है?
किस 'नए भारत' की ये परियोजना है?
कैसी ये परीक्षा प्रणाली है,
अपने युवाओं की छीन ली जवानी है।

क्यों पेपर में गलत सवाल डालते,
फिर सौ-सौ रुपए का व्यापार करते।
रैंक लिस्ट का नहीं प्रावधान करते,
वेटिंग लिस्ट का नहीं समाधान करते।
साहब, दो-चार हो तो बोल-
अरे, आप तो जुल्म हजार करते!
जागो सरकार, जागो! बस यही कहना है-
हमारी समस्याओं पर ध्यान दो,
एक वर्ष के भीतर पूरी प्रक्रिया हो।
रिहा नहीं, बस नौकरियाँ हों।

युवाओं से भी कुछ कहना है-
अब और नहीं सहना है।
बुलंद अपनी आवाज करो,
आज कुछ ऐसी हुंकार भरो।
आ जाए चाहे सैलाब अब-
रुकना नहीं, झुकना नहीं
अपने हकों का करना है हिसाब अब।

एक गुड़िया के कच्चे रुई के फाहे-सी है बिटिया,
कभी उछल कर, कभी बिदक कर-
आटे की चिड़िया-सी है बिटिया
नन्हें पावों की धीमी थाप है बिटिया,
सर्दी में गर्म रोटी की भाप है बिटिया।

संगम का गंगा जल है बिटिया,
गरीब किसान का हल है बिटिया।
चूड़ियों की खनक, पायल की झंकार है बिटिया,
झरने की मध्यम फुहार है बिटिया।

कभी धूप कभी छांव कभी बरसात है बिटिया,
गर्मी में पहली बारिश की सौगात है बिटिया।
और किसी मुश्किल खेल में मिलने वाली जीत है
बिटिया,

दिल को छू जाए वो मधुर गीत है बिटिया।
चिड़िया की चहचाहट और कोयल की कूक है बिटिया,
हो जिसमें भला सबका वो प्यारा सा झूठ है बिटिया।

माँ की एक पुकार है बिटिया,

मुस्काता हुआ त्योहार है बिटिया।

सच बोलू तो...बिटिया पीड़ा की घाटी है,
क्या किसी ने उसकी पीड़ा रत्ती भर भी बाटी है?
अरमानों के काले जंगल उसको रोज़ डराते हैं,
हम, "बिटिया कैसी हो?" कहकर चुपचाप सो जाते हैं,
हर दुःख को वो हंसते-हंसते, बिन बोले सह लेती है,
पूरे घर में खुशी बिखरे, बिटिया दुःख में रह लेती है।

आज़ादी



श्री अमित नागर (आशुलिपिक)

पंछी है कैद अगर,
तो उड़ने में कर मदद तू।
रात है काली अगर,
दिया जलाकर रौशन कर तू।
बीत गए कई साल रूढ़िवादी विचारों में उलझ कर-
अब सुलझा मन के भाव तू।
औरत, आदमी या हो कोई बच्चा,
सबके जीवन का कर सम्मान तू।
तोड़ दे दीवारें सारी,
आगे बढ़ विजयी राह पर।
उन वीरों ने क्या पाया,
अगर तू अब भी डर में खोया।
उठ जा तू, छू ले आसमान,
आज़ादी पर सबका हक।



खुश हूँ



श्री सागर (बहु-कार्य कर्मचारी)

जिंदगी है छोटी, हर पल में खुश हूँ।
काम में खुश हूँ, आराम में खुश हूँ,
आज पनीर नहीं, दाल में ही खुश हूँ।
आज गाड़ी नहीं, पैदल ही खुश हूँ,
आज कोई नाराज़ है, उसके इस अंदाज़ से ही खुश हूँ।
जिसको देख नहीं सकता, उसकी आवाज़ से ही खुश हूँ,
जिसको पा नहीं सकता, उसको सोचकर ही खुश हूँ।
बीता हुआ कल जा चुका है, उसकी मीठी याद में ही
खुश हूँ,
आने वाले कल का पता नहीं, इंतज़ार में ही खुश हूँ।
हंसता हुआ बीत रहा है, आज में ही खुश हूँ,
अगर दिल को छुआ, तो जवाब देना,
वरना बिना जवाब के भी खुश हूँ।



मैं हूँ हिंदी



श्री सागर (बहु-कार्य कर्मचारी)

मैं हूँ हिंदी, भाषाओं की रानी,
चलो सुनाऊँ, मैं अपनी कहानी।
मैं भारतीय संस्कृति की पहचान
मैं हर भारतवासी की शान----
14 सितम्बर को शुरू हुई,
हिंदी दिवस मनाने की शुरुआत।
मैंने जोड़ा भारत को एकता की माला में----
मन से दूर करूँ मैं, भेदभाव की हर दीवार,
स्थानीय भाषाओं के साथ,
जगह बनाती और कभी-कभी
मैं उन्हीं में अपना अंश पाती,
हाँ, मैं भारत माँ के माथे पर
एक चमकीली बिंदी हूँ,
मैं भाषाओं की रानी हिंदी हूँ,
मैं भाषाओं की रानी हिंदी हूँ।

सपने बुनना सीख लो



श्री बृजेश (ड्राइवर)

बैठ जाओ सपनों की नाव में,
मौके की न तलाश करो।
सपने बुनना सीख लो,
खुद ही थाम लो हाथों में पतवार।
मांझी का न इंतजार करो,
सपने बुनना सीख लो।
पलट सकती है नाव की तकदीर,
गोते खाना सीख लो,
सपने बुनना सीख लो।





जुआ खेल और युवाओं पर इसका प्रभाव

प्रस्तावना

आज के डिजिटल युग में तकनीक ने जहाँ एक ओर मनुष्य के जीवन को आसान और सुगम बनाया है, वहीं दूसरी ओर कई ऐसी समस्याएँ भी उत्पन्न कर दी हैं, जो समाज और युवाओं के लिए घातक साबित हो रही हैं। ऐसी ही एक समस्या है- ऑनलाइन जुए के खेल। इंटरनेट और स्मार्टफोन के माध्यम से युवा वर्ग बड़ी संख्या में Aviator, Dream11, Fantasy Cricket League जैसे ऑनलाइन गेम्स की ओर आकर्षित हो रहे हैं। ये खेल जहाँ मनोरंजन और आमदनी का साधन बनकर सामने आए थे, वहीं आज यह लत (नशा) का रूप ले चुके हैं।

ऑनलाइन जुए के ये खेल युवाओं के मानसिक, शारीरिक और सामाजिक जीवन को बुरी तरह प्रभावित कर रहे हैं। इस निबंध में हम इन ऑनलाइन गेम्स के प्रकार, उनके आकर्षण, लत और इसके दुष्परिणामों पर विस्तृत चर्चा करेंगे।

ऑनलाइन जुए के खेल : एक परिचय

ऑनलाइन जुए के खेल वे डिजिटल गेम हैं, जिनमें उपयोगकर्ता वास्तविक या आभासी मुद्रा का निवेश कर अनुमान या भाग्य के आधार पर पैसा जीतने की कोशिश करते हैं। ये खेल एक प्रकार के जुए की श्रेणी में आते हैं, लेकिन इंटरनेट और मोबाइल एप्स के जरिए इनकी पहुँच हर व्यक्ति तक हो गई है।

Aviator जैसे खेल में उपयोगकर्ता को एक विमान (Plane) के उड़ान भरने के समय को पकड़ना होता है। जितनी देर विमान उड़ान भरता है, उतना पैसा दांव पर लगाया जाता है। लेकिन जैसे ही विमान गिरता है, पैसा डूब जाता है।

श्री प्रवीण यादव (बहु-कार्य कर्मचारी)

इसी तरह, Dream11 और Fantasy Cricket League में उपयोगकर्ता क्रिकेट मैच के खिलाड़ियों की अपनी टीम बनाते हैं और उन खिलाड़ियों के प्रदर्शन के अनुसार अंक प्राप्त करते हैं। यदि उपयोगकर्ता की टीम सबसे अधिक अंक प्राप्त करती है, तो उसे नकद पुरस्कार मिलता है।

हालाँकि, ये खेल शुरुआत में केवल मनोरंजन के उद्देश्य से बनाए गए थे, परन्तु अब इनमें धन-लाभ का लालच जुड़ जाने के कारण यह जुए का रूप ले चुके हैं।

युवाओं में ऑनलाइन जुए की लत के कारण

आज का युवा वर्ग तेजी से डिजिटल दुनिया से जुड़ रहा है। स्मार्टफोन और सस्ते इंटरनेट डेटा ने इन ऑनलाइन गेम्स की पहुँच हर हाथ तक पहुँचा दी है। ऑनलाइन जुए के इन खेलों की लोकप्रियता के पीछे कई कारण हैं-

- 1. धन अर्जन की लालसा:** युवा वर्ग बिना अधिक मेहनत के कम समय में अधिक पैसा कमाने की चाह में इन खेलों की ओर आकर्षित होता है।
- 2. मनोरंजन और समय व्यतीत करना:** कई युवा इन खेलों को समय बिताने और मनोरंजन का साधन मानकर खेलना शुरू करते हैं, जो धीरे-धीरे आदत बन जाती है।
- 3. सहज उपलब्धता:** इन खेलों की एप्लीकेशन मोबाइल पर आसानी से डाउनलोड की जा सकती हैं और इनके विज्ञापन भी सोशल मीडिया व टीवी पर बड़े पैमाने पर दिखाए जाते हैं।
- 4. सहपाठी और मित्र प्रभाव:** साथियों के साथ खेलने और उनके बीच प्रतियोगिता का भाव भी युवाओं को इसकी ओर खींचता है।

5. **क्विक इनाम और बोनस ऑफर:** पहले खेल में जीतने या बोनस मिलने से उपयोगकर्ता को यह भ्रम हो जाता है कि वह भविष्य में भी पैसे कमा सकता है।

ऑनलाइन जुए की लत के दुष्परिणाम

ऑनलाइन जुए के इन खेलों की लत कई स्तर पर युवाओं को प्रभावित कर रही है-

1. **आर्थिक नुकसान:** यह खेल प्रारंभ में कुछ जीत का लालच देकर बाद में भारी नुकसान कराते हैं। कई युवा कर्ज में डूब जाते हैं।
2. **मानसिक तनाव और डिप्रेशन:** पैसे हारने की चिंता, बार-बार जीतने की चाह और असफलता से मानसिक तनाव, अवसाद और गुस्सा उत्पन्न होता है।
3. **शैक्षिक और व्यावसायिक हानि:** युवा पढ़ाई-लिखाई और कामधंधा छोड़कर मोबाइल गेम्स में व्यस्त हो जाते हैं, जिससे उनका करियर चौपट हो जाता है।
4. **सामाजिक दूरी:** यह लत व्यक्ति को समाज और परिवार से अलग कर देती है। दोस्त, रिश्तेदार और परिवार से दूरी बढ़ जाती है।
5. **अपराध में वृद्धि:** पैसे की जरूरत और हानि की पूर्ति के लिए कई युवा चोरी, ठगी और अन्य अपराधों में लिप्त हो जाते हैं।

समाधान और सुझाव

इस गंभीर समस्या से निपटने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं-

1. **सरकारी नियंत्रण:** सरकार को इन ऑनलाइन जुए के खेलों पर सख्त नियंत्रण लगाना चाहिए और लाइसेंस के बिना इनके संचालन पर रोक लगानी चाहिए।

2. **जागरूकता अभियान:** विद्यालयों, कॉलेजों और सामाजिक संस्थाओं को युवाओं के बीच इस समस्या के प्रति जागरूक करना चाहिए।

3. **पारिवारिक निगरानी:** माता-पिता को बच्चों के मोबाइल उपयोग और गतिविधियों पर नजर रखनी चाहिए।

4. **सकारात्मक विकल्प:** युवाओं के लिए खेल, कला, साहित्य और अन्य रचनात्मक गतिविधियों को बढ़ावा देना चाहिए, ताकि वे व्यर्थ की आदतों से बचें।

5. **काउंसलिंग और चिकित्सकीय सहायता:** जिन युवाओं को इस लत से निकलने में कठिनाई हो, उनके लिए मानसिक परामर्श और उपचार की व्यवस्था होनी चाहिए।

उपसंहार

ऑनलाइन जुए के खेल, जो कभी मनोरंजन के उद्देश्य से शुरू किए गए थे, आज युवाओं के जीवन के लिए गंभीर खतरा बन चुके हैं। Aviator, Dream11, Fantasy Cricket League जैसे गेम्स ने युवा वर्ग को मानसिक, आर्थिक और सामाजिक रूप से बर्बाद करना शुरू कर दिया है।

इस समस्या का समय रहते समाधान निकालना बेहद आवश्यक है। समाज, परिवार, सरकार और युवा स्वयं सभी को मिलकर इन जुए के खेलों की लत से लड़ना होगा और एक स्वस्थ, सकारात्मक एवं उत्पादक जीवनशैली को अपनाना होगा।

यदि समय रहते इस समस्या पर अंकुश नहीं लगाया गया, तो आने वाला भविष्य युवाओं को बर्बादी के गर्त में धकेल सकता है। अतः हमें आज ही सजग होकर इस दिशा में ठोस कदम उठाने होंगे।

औरों की खातिर



श्री बृजेश (ड्राइवर)

जो अपना न बने मन से, उसे भी कहना पड़ता है,
जिंदगी को चलाने को साथ में रहना पड़ता है।
कोई भी चोट लगती है दर्द तो लाजिमी होगा,
दवा-दारु खूब कर लो, उसे पर सहना पड़ता है।
दर्द इस धार के भी तो सदा दिल में रहे होंगे,
देख लो-औरों की खातिर, इसे पर बहना भी पड़ता है।
कोई मिट्टी का टीला हो या ढेरी कोई "मैं" की,
बोझ बढ़ जाए जिसका भी, उसे तो ढहना पड़ता है।
जो जिसके पास है, मधुकर, वही बस काम आएगा,
सर्प का देख लो-शिव को बनाना गहना पड़ता है।

सोचता हूँ



श्री अजय कुमार चौहान (बहु-कार्य कर्मचारी)

"क्या कमी रह गई शायद कुछ, या
जितना था- वो काफी न था,
नहीं समझ पाया, तो समझा दिया होता,
या जितना समझ पाया- वो काफी न था।
शिकायत थी तुम्हारी कि तुम जताते नहीं,
प्यार है तो कभी जमाने को बताते क्यों नहीं?
अरे-मोहब्बत की क्या मैं नुमाइश करता?
मेरी आँखों में जितना तुम्हें नज़र आया,
क्या वो काफी नहीं था?
"सोचता हूँ... कि क्या कमी रह गई,
क्या जितना था क्या वो काफी नहीं था?"

“प्रान्तीय ईर्ष्या-द्वेष को दूर करने में
जितनी सहायता इस हिंदी प्रचार से मिलेगी,
उतनी दूसरी किसी चीज से नहीं मिल सकती।”

- सुभाषचंद्र बोस

जिंदगी मुस्कुराने लगी



श्री अजय कुमार चौहान (बहु-कार्य कर्मचारी)

जब भी हम रोए- सर पर हाथ मिला उनका,

जब भी हम खोए तो साथ मिला उनका।

तो जिंदगी मुस्कुराने लगी.....

जब भी हम दुखी हुए- तो साहस मिला उनका,

हर तकलीफ में मुस्कुराने का एहसास मिला उनका।

तो जिंदगी मुस्कुराने लगी.....

“माँ” कहते हैं हम उन्हें-

हमें सारा प्यार मिला उनका।

“पिता” कहते हैं हम उन्हें-

संस्कार मिला उनका, और नाम मिला उनका।

तो जिंदगी मुस्कुराने लगी.....

यूँ तो हम लिख नहीं सकते

उनसे मिले जज़्बातों को-

बस उनके प्यार के साथ-जिंदगी मुस्कुराने लगी।

हृदय स्पर्श करने वाली कविता



श्री प्रवीण (बहु-कार्य कर्मचारी)

जब तक चलेंगी जिंदगी की साँसे,

कहीं प्यार, कहीं टकराव मिलेगा।

कहीं बनेंगे संबंध अंतर्मन से तो,

कहीं आत्मीयता का अभाव मिलेगा।

कहीं मिलेगी जिंदगी में प्रशंसा तो,

कहीं नाराजगियों का बहाव मिलेगा।

कहीं मिलेगी सच्चे मन से दुआ तो,

कहीं भावनाओं में दुर्भाव मिलेगा।

कहीं बनेंगे पराए रिश्ते भी अपने तो

कहीं अपनों से ही खिंचाव मिलेगा।

कहीं होगी खुशामदेँ चेहरे पर तो,

कहीं पीठ पर बुराई का घाव मिलेगा।

तू चला-चल रही अपने कर्मपथ पर,

जैसा तेरा भाव-वैसा प्रभाव मिलेगा।

रख स्वभाव में शुद्धता का स्पर्श तू,

अवश्य जिंदगी का पड़ाव मिलेगा।

“जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य का गौरव
का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।”

- डॉ. राजेंद्र प्रसाद



विमान में भोजन

श्री उपमन्यु प्रताप सिंह (लेखापरीक्षक)

मैं अपनी सीट पर बैठा था, दिल्ली के लिए उड़ान भरते हुए—
लगभग 6 घंटे की यात्रा थी। मैंने सोचा, एक अच्छी किताब
पढ़ूंगा और एक घंटा सो लूंगा

टेकऑफ से ठीक पहले, लगभग 10 सैनिक आए और मेरे
आसपास की सीटों पर बैठ गए। यह देखकर मुझे रोचक लगा,
तो मैंने बगल में बैठे एक सैनिक से पूछा, “आप कहां जा रहे
हैं?”

“आगरा, सर! वहां दो हफ्ते की ट्रेनिंग है, फिर हमें एक
ऑपरेशन पर भेजा जाएगा,” उसने जवाब दिया

एक घंटा बीत गया। एक घोषणा हुई— “जो यात्री चाहें, उनके
लिए लंच उपलब्ध है, खरीद के आधार पर

मैंने सोचा – अभी लंबा सफर बाकी है, शायद मुझे भी खाना
लेना चाहिए। जैसे ही मैंने वॉलेट निकाला, मैंने सैनिकों की
बातचीत सुनी

“चलो, हम भी लंच ले लें?” एक ने कहा

“नहीं यार, यहां बहुत महंगा है। जमीन पर उतरकर किसी ढाबे
में खा लेंगे,” दूसरे ने कहा

“ठीक है,” पहला बोला

मैं चुपचाप एयर होस्टेस के पास गया और कहा, “इन सभी
को लंच दे दीजिए।” और मैंने सबका भुगतान कर दिया

उसकी आंखों में आंसू थे। बोली, “मेरे छोटे भाई की पोस्टिंग
कारगिल में है, सर। ऐसा लगा जैसे आप उसे खाना खिला रहे
हों धन्यवाद।” उसने सिर झुकाकर नमस्कार किया

वो पल मेरे दिल को छू गया

आधे घंटे में सभी सैनिकों को उनके लंच बॉक्स मिल गए

खाना खत्म करने के बाद, मैं फ्लाइट के पीछे वॉशरूम की
ओर गया। पीछे की सीट से एक वृद्ध व्यक्ति आए

“मैंने सब देखा। आप सराहना के पात्र हैं,” उन्होंने हाथ बढ़ाते
हुए कहा

“मैं भी इस पुण्य में भाग लेना चाहता हूँ,” उन्होंने चुपचाप रु
500 मेरे हाथ में रख दिए

मैं वापस अपनी सीट पर आ गया

आधे घंटे बाद, विमान का पायलट मेरी सीट तक आया, सीट
नंबर देखता हुआ

“मैं आपसे हाथ मिलाना चाहता हूँ,” वह मुस्कुराया

मैं खड़ा हुआ। उसने हाथ मिलाते हुए कहा, “मैं कभी फाइटर
पायलट था। तब किसी ने यूं ही मेरे लिए भोजन खरीदा था। वो
प्यार का प्रतीक था, जो मैं कभी नहीं भूला आपने वही याद
ताजा कर दी

सभी यात्रियों ने ताली बजाई। मुझे थोड़ी झिझक हुई। मैंने ये
सब प्रशंसा के लिए नहीं किया था, बस एक अच्छा कार्य
किया।

मैं थोड़ा आगे बढ़ा। एक 18 साल का युवक आया, हाथ
मिलाया और एक नोट मेरी हथेली में रख दिया।

यात्रा समाप्त हो गई

जैसे ही मैं विमान से उतरने के लिए दरवाजे पर पहुंचा, एक व्यक्ति चुपचाप कुछ मेरी जेब में रखकर चला गया फिर एक नोट

विमान से बाहर निकलते ही देखा, सभी सैनिक एकत्र थे। मैं भागा, और सभी यात्रियों द्वारा दिए गए नोट्स उन्हें सौंप दिए

“इसे आप खाने या किसी भी जरूरत में उपयोग करिए जब तक ट्रेनिंग साइट पर पहुंचें। जो हम देते हैं, वो कुछ भी नहीं है उस बलिदान के आगे जो आप हमारे लिए करते हैं। भगवान आपको और आपके परिवारों को आशीर्वाद दे,” मैंने नम आंखों से कहा

अब वे दस सैनिक केवल रोटी नहीं, एक पूरे विमान का प्यार साथ लेकर जा रहे थे

मैं अपनी कार में बैठा और चुपचाप प्रार्थना की

“हे प्रभु, इन वीर जवानों की रक्षा करना, जो इस देश के लिए जान देने को तैयार रहते हैं,

एक सैनिक एक खाली चेक की तरह होता है, जो भारत के नाम पर किसी भी राशि के लिए भुनाया जा सकता है। यहां तक कि जीवन तक

दुर्भाग्य है कि आज भी बहुत लोग इनकी महानता नहीं समझते।

भारत माता के बेटों का सम्मान – स्वयं का सम्मान है।

**“अखिल भारत के परस्पर व्यवहार के लिये
ऐसी भाषा की आवश्यकता है जिसे जनता का
अधिकतम भाग पहले से ही जानता समझता है।”**

– महात्मा गाँधी

समय



शिवम रावत (पुत्र श्री संदीप रावत)

समय का जो रखता ध्यान,
जग में होता उसका मान।
समय को जो खोता है,
बाद में वह रोता रहता है।
समय कभी नहीं रुकता है,
चलता है-बस चलता है।
सफल वही यहाँ रहता है,
समय के साथ जो चलता है।



जाने क्या हुआ है



श्री संदीप रावत (आशुलिपिक)

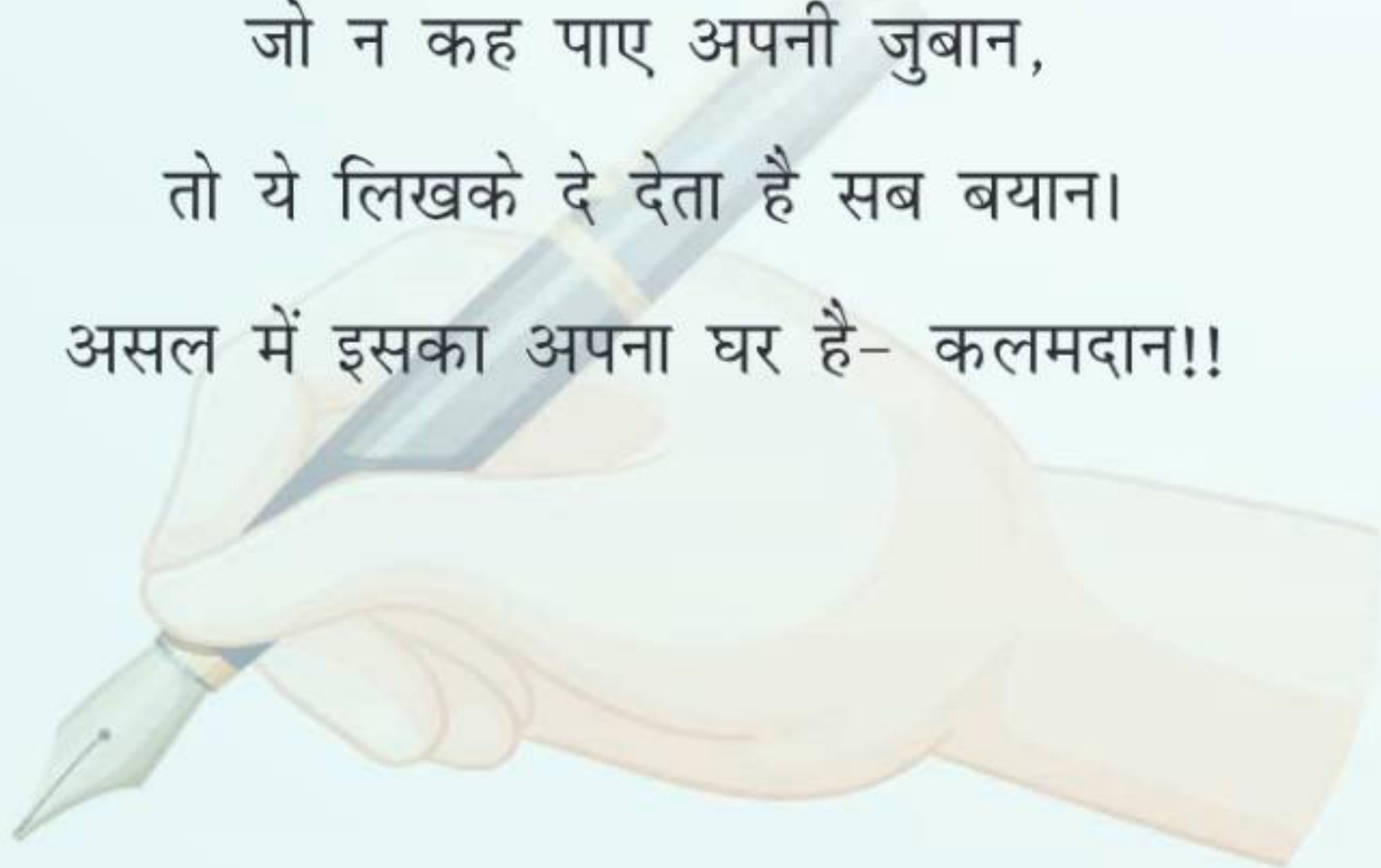
सुख सुविधाओं का जुटा लिया है सब सामान,
फिर भी जीवन नहीं हुआ है आसान।
इंसान हुआ है कितना हैरान और परेशान,
अपनी ही बनाई चीजें
आज कर रहा है उसका नुकसान
बढ़ते प्रदूषण से
जल रही है ये धरती,
और
धधक रहा है ये नीला आसमान।
ज़हरीली शराब ले रही है
न जाने कितनों की जान,
अपने ही कर रहे हैं अपनों का अपमान
जाने क्या हुआ है-
असली चीजों का मिट रहा है
जहान से नामो-निशान!
हे भगवान!
खतरे में है ये जहान,
हर तरफ़ है लड़ाई-झगड़े और युद्ध घमासान!!

पेन



सुश्री चाँदनी कुमारी (लेखापरीक्षक)

दिल की कलम से करती हूँ
मैं तो एक पेन का गुणगान,
इसकी महिमा का करती हूँ
बखूबी से बखान-
और
तह-ए-दिल से करती हूँ मैं इसका सम्मान।
इसी ने ही लिखी है
गीता, रामायण और कुरान,
इसे तो माना है ये सकल जहान।
सदियों से है इससे जान-पहचान,
ये तो हर हाथ और पॉकेट की है
एक अजब-सी शान।
इसका तो हम पर है
एक बहुत बड़ा एहसान-
ये तो बना देता है अल्पज्ञानी को भी विद्वान
जो न कह पाए अपनी जुबान,
तो ये लिखके दे देता है सब बयान।
असल में इसका अपना घर है- कलमदान!!



पहला कदम जरूरी है



सुश्री प्रीती चौधरी (लेखापरीक्षक)

व्रक्त गुजर जाने के बाद तो पछताना ही है,
आज जो बैठा है मौन-तो कल अफसोस जताना ही है।
तू अभी प्रयास न करके निराश हो रहा है,
जैसे पतझड़ देखकर, वसंत को खो रहा है।
माना तू अभी शून्य है,
पर रुक जाना ही अगर नियति है-तो फिर कर्म कहाँ है?
शून्य से शुरू होते हैं सारे विस्तार,
हर महाशक्ति ने उठाया है पहला भार।
तट पर बैठकर लहरें गिनने से कुछ नहीं होगा,
रत्न उसी को मिलते हैं- जो गहराई में डूबा होगा।
डरता है जो थाह से, वो खाली हाथ ही लौटेगा,
हौंसले वाला ही जीवन को सार्थक मोड़ देगा।
कुछ न आया हाथ, तो समझ डुबकी अभी अधूरी है,
साँसों में आग बाकी है- तू थका नहीं, बस ये दूरी है।
हर यात्रा की शुरुआत एक सोच से होती है,
चाहे राह कठिन हो- शुरुआत रोज़ से होती है।
पहला कदम जरूरी है, चाहे काँपते हों पाँव,
भय के पार ही छिपा है तेरा असली ठाँव
जो शिव का ध्यान धर ले- वो डर से मुक्त होता है,
प्रयासों से नाता जोड़, भाग्य भी झुकता है।



सुश्री चाँदनी कुमारी (लेखापरीक्षक)

हर असमंजस के लिए मुस्कुराहट ही चुनिंदा साधन है

हर असमंजस की स्थिति को संभालने का साधन है मुस्कुराहट। कभी-कभी हम ऐसी स्थिति में होते हैं जब हम दुविधा या अनिर्णय की स्थिति में होते हैं, तब हम अपने होंठों पर मुस्कुराहट की रेखा लाकर स्थिति को संभालने की कोशिश करते हैं। कभी-कभी यह भी देखा जाता है कि लोग अपने गम को छुपाने के लिए भी अपने चेहरे पर मुस्कान लाते हैं।

मनुष्य असमंजस में बहुत बार फस जाता है और सोचता रहता है क्या करें, क्या न करें क्या बोलें, क्या न बोलें, स्वीकृति दे या न दें तब उस वक्त मुस्कुराहट ही उस स्थिति को संभाल सकती है। मुस्कुराहट रहस्यमयी होती है। मुस्कुराहट न तो सकारात्मक न ही नकारात्मक उत्तर देती है। इसे हम इस उदाहरण से समझ सकते हैं जैसे जब हम डॉक्टर के पास जाते हैं और बीमारी के बारे में बताते हैं और डॉक्टर से अपेक्षा करते हैं कि वह हमें सकारात्मक उत्तर दे पर उस समय डॉक्टर सिर्फ अपने चेहरे पर मुस्कुराहट लाता है और कुछ भी जवाब नहीं देता तब हम इससे कुछ हद तक सकारात्मक उत्तर पा लेते हैं पर पूरी तरह नहीं। उसी प्रकार वकील की मुस्कुराहट, शिक्षक की मुस्कुराहट सब रहस्यमयी होते हैं। अगर हम अतीत की बात करें तो भीष्म की मुस्कुराहट हो या फिर शकुनी की मुस्कुराहट सब रहस्यमयी ही थे। उसी प्रकार गाँधी जी जब सम्राट से मिलने गए तब वह धोती धारण किए हुए गए तब सम्राट ने उनसे पूछा आप पूरे वस्त्र पहनकर क्यों नहीं आए तब गाँधीजी मुस्कुराते हुए बोले हिन्दुस्तान के सारे

कपड़े तो आपने चुरा लिए हैं। इस मुस्कुराहट के कारण वहाँ वह अपनी बात भी रख पाए और स्थिति को बिगड़ने से भी संभाल लिया। अतः अतीत से भी इस बात का परिचय मिलता है कि हर असमंजस की स्थिति मुस्कुराहट से संभल सकती है। राजनीति में भी कुटिल मुस्कुराहट का इस्तेमाल किया जाता है। राजनेता मुस्कुराते हुए अपनी बहुत सारी बातें जनता के समक्ष रखते हैं। इस तरह हम कह सकते हैं कि राजनीति का सबसे बड़ा हथियार मुस्कुराहट है। मोनालिसा की मुस्कुराती हुई पेंटिंग जिसकी चर्चा कई रचनाकारों ने की है। कई रचनाकारों ने कहा है बहुत समय से जो महिलाओं ने पीड़ा सही है उसकी अभिव्यक्ति यह मोनालिसा की पेंटिंग के द्वारा की गई है। इस तरह हम कह सकते हैं कि मनुष्य की समझ पाना बहुत कठिन कार्य है। कभी-कभी तो धोखेबाज भी मुस्कुराहट के द्वारा ही सीधे-सीधे मनुष्य के साथ छल करते हैं। वह मुस्कुराकर यह भरोसा दिलाते हैं कि जो वह जो कह रहे हैं वह बिल्कुल सही है और बाद में पता चलता है कि वह कितना बड़ा छल कर गए। इसी प्रकार घर में पिता की मुस्कुराहट, माँ की मुस्कुराहट, भाई-बहन की मुस्कुराहट हमारे दिल को सुकून देती है और हमें ऐसा प्रतीत होता है कि घर में सब खुश हैं और सब अच्छा चल रहा है।

दूसरे शब्दों में हम यह भी कह सकते हैं कि मुस्कुराहट सिर्फ असमंजस स्थिति को दूर करने का साधन नहीं है बल्कि रूठे हुए व्यक्ति को मनाने का, तनावपूर्ण स्थिति को ठीक करने का भी साधन है। हर मनुष्य के जीवन का एक लक्ष्य

होना चाहिए कि वह दूसरे मनुष्य के चेहरे पर मुस्कुराहट लाए तभी उस मनुष्य का जीवन सफल माना जाता है। मुस्कुराहट हर समय भी अच्छी नहीं मानी जाती। ऐसे व्यक्ति को मूर्ख की श्रेणी में रखा जाता है। जब हम किसी पीड़ित व्यक्ति को देखते हैं और असमंजस में पड़ जाते हैं कि क्या करें और क्या न करें और सिर्फ मुस्कुरा कर वहाँ से चले जाते हैं तो इस प्रकार का हमारा व्यवहार सामाजिक नहीं माना जाता और यह हमारी गलत विचारधारा को भी दर्शाता है। मुस्कुराहट पस्थिति को संभालने का भी काम करता है। जब हमें किसी से असहमति व्यक्त करनी होती है और कुछ बोलने के हम इच्छुक नहीं होते तब मुस्कुराकर हम परिस्थिति को संभाल सकते हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि मुस्कुराहट हर असमंजस के लिए चुनिंदा साधन ही नहीं बल्कि सामाजिक साधन भी है। जब हम किसी से समाज में मिलते-जुलते हैं और साथ ही चेहरे पर मुस्कुराहट की लकीर भी रखते हैं तब इससे हमारे सामाजिक रिश्ते और भी ज्यादा मजबूत होते हैं और लोग हमारी प्रशंसा भी करते हैं। मुस्कुराहट बीमारी का इलाज भी माना जाता है। जब हम घातक बीमारी से ग्रसित होते हैं और हमेशा चिंतित रहते हैं उस समय यदि हम मुस्कुराहट चेहरे पर रखे तब हमें उस घातक बीमारी से लड़ने की शक्ति भी मिलती है। अतः इससे स्पष्ट है कि मुस्कुराहट हर असमंजस के लिए चुनिंदा साधन ही नहीं बल्कि अन्य कई परिस्थितियों को संभालने का भी साधन है।

“मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूँ पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं सह नहीं सकता।”

- आचार्य विनोबा भावे

हौसला



सुश्री प्रीती चौधरी (लेखापरीक्षक)

हाँ, मैं कमाती हूँ, मैं घर भी चलाती हूँ।
मैं उम्मीद और लोगों की सोच, दोनों को संभालती हूँ।
आसान क्या है इस संसार में, फिर भी मैं हर राह को
आसान बनाती हूँ।
वक्त मेरा तो सबके हिस्से में बट गया, हर दिन जैसे
जिम्मेदारियों में कट गया।
उड़ने के बहुत ख्वाब थे आँखों में, पर हर सपना आँखों
में सिमट गया।
मैं भी थकती हूँ, मैं भी टूट जाती हूँ पर आँसू पोंछकर
खुद हौसले को जगाती हूँ।
चूल्हे की आँच से दफ्तर की फाइलों तक, हर मोर्चे पर
मैं डटकर चलती हूँ।
हाँ, मैं औरत हूँ -----
कमजोर नहीं, बस धैर्य की मिसाल हूँ।
मैं उम्मीद हूँ किसी के जीने की, मैं सोच हूँ नये जमाने
की
दुनिया के हर रंग झेलती हूँ, पर कभी अपने रंग नहीं
छोड़ती हूँ।
मैं माँ हूँ, बेटी हूँ, पत्नी भी हूँ, मैं एक इंसान हूँ
-----और सबसे पहले, मैं खुद हूँ।

पृथ्वी



अंकिता रावत (पुत्री श्री संदीप रावत)

पेड़ धरती की शान हैं,
हमारे जीवन की मुस्कान हैं।
आओ, मिलकर पेड़ लगाएँ हम,
अपनी धरती को हरित बनाएँ हम।
धरती की बस यही पुकार-
“पेड़ लगाओ बार-बार।”
धरती में बसी है सबकी जान,
आओ, इसका सब सम्मान करें।
पेड़-पौधे और पानी को बचाएँगे,
तभी सुंदर भविष्य हम पाएँगे।
पेड़ धरती की शान हैं,
हमारे जीवन की मुस्कान हैं।

वक्त ही वक्त



सुश्री संगीता (लेखापरीक्षक)

मेरे पास वक्त ही वक्त है,
और सच-सच कहूँ तो सचमुच,
वक्त के सिवाय कुछ भी नहीं है।
लेकिन मेरे पास इतना वक्त नहीं है
कि हर किसी चीज से
निकाल सकूँ वक्त,
डर सकूँ हर किसी चीज से,
या कि डरा सकूँ हर किसी चीज को।
इतनी जगह नहीं है मेरे पास कि
हर किसी चीज के लिए
बना सकूँ जगह।
मनुष्य हूँ, और इच्छाएँ अनन्त हैं,
फिर कर ही क्या सकता हूँ मैं
कि हर हाल मिले हर चीज को भी,
यहाँ तक कि नापसंद चीजों को भी।
नापसंद चीजों को भी मिले जगह-
जरूरी है ये ख्याल और ख्वाहिश
मेरे पास वक्त ही वक्त है।

अंतिम यात्रा का वर्णन



सुश्री संगीता (लेखापरीक्षक)

था मैं नींद में और.... मुझे इतना सजाया जा रहा था....
बड़े प्यार से मुझे... नहलाया जा रहा था....
ना जाने था वो कौन सा अजब खेल
मेरे घर में....
बच्चों की तरह मुझे....कंधे पर उठाया जा रहा था....
था पास मेरा हर अपना.... उस वक्त....
फिर भी मैं हर किसी के.... मन से भुलाया जा रहा था...
जो कभी देखते भी न थे.... मोहब्बत की निगाहों से....
उनके दिल से भी प्यार... मुझ पर लुटाया जा रहा था...
मालूम नहीं क्यों हैरान था.... हर कोई मुझे
सोते हुए देख कर....
जोर-जोर से रोकर... मुझे जगाया जा रहा था...
काँप उठी मेरी रूह, वो मंजर
देख कर....
जहाँ मुझे हमेशा के लिए... सुलाया जा रहा था....
मोहब्बत की इन्तहा थी... जिन दिलों में मेरे लिए....
उन्हीं दिलों के हाथों..... आज मैं जलाया जा रहा था!!!

“हिंदी आम बोलचाल की ‘महाभाषा’ है।”

- जॉर्ज ग्रियर्सन

जिंदगी



सुश्री प्रियांका (वरिष्ठ लेखापरीक्षक)

कल एक झलक जिंदगी को देखा,
वो राहों पे मेरी गुनगुना रही थी।

फिर ढूँढा उसे इधर-उधर,
वो आंख मिचौली कर मुस्कुरा रही थी।

एक अरसे के बाद आया मुझे करार,
वो सहला के मुझे सुला रही थी।

हम दोनों क्यूँ ख़फा हैं एक दूसरे से?
मैं उसे और वो मुझे समझा रही थी।

मैंने पूछ लिया- “क्यों इतना दर्द दिया कमबख्त तूने?”

वो हँसी और बोली- “मैं जिंदगी हूँ पगले,
तुझे जीना सिखा रही थी।”

वक्त लगता है.....



सुश्री प्रियांका (वरिष्ठ लेखापरीक्षक)

पानी को बर्फ में बदलने में वक्त लगता है.....
ढले हुए सूरज को निकलने में वक्त लगता है....

थोड़ा धीरज रख, थोड़ा और जोर लगाते रहना...
जंग लगे दरवाजे को खुलने में वक्त लगता है....

कुछ देर रुकने के बाद फिर से चल पड़ना दोस्त....
हर ठोकर के बाद संभलने में वक्त लगता है

बिखरेगी वही चमक तेरे वजूद से, तू महसूस करना...
टूटे हुए मन को संवरने में थोड़ा वक्त लगता है....

जो तूने कहा कर दिखाएगा, रख यकीन...
गरजे जब बादल तो बरसने में वक्त लगता है

खुशी आ रही है और आएगी ही, इंतजार कर ..
जिद्दी दुख-दर्द को टलने में थोड़ा वक्त लगता है.....

“सभी भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि
आवश्यक है तो वो देवनागरी ही हो सकती है।”

- जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर

कार्यालय के कार्यक्रमों की कुछ झलकियां



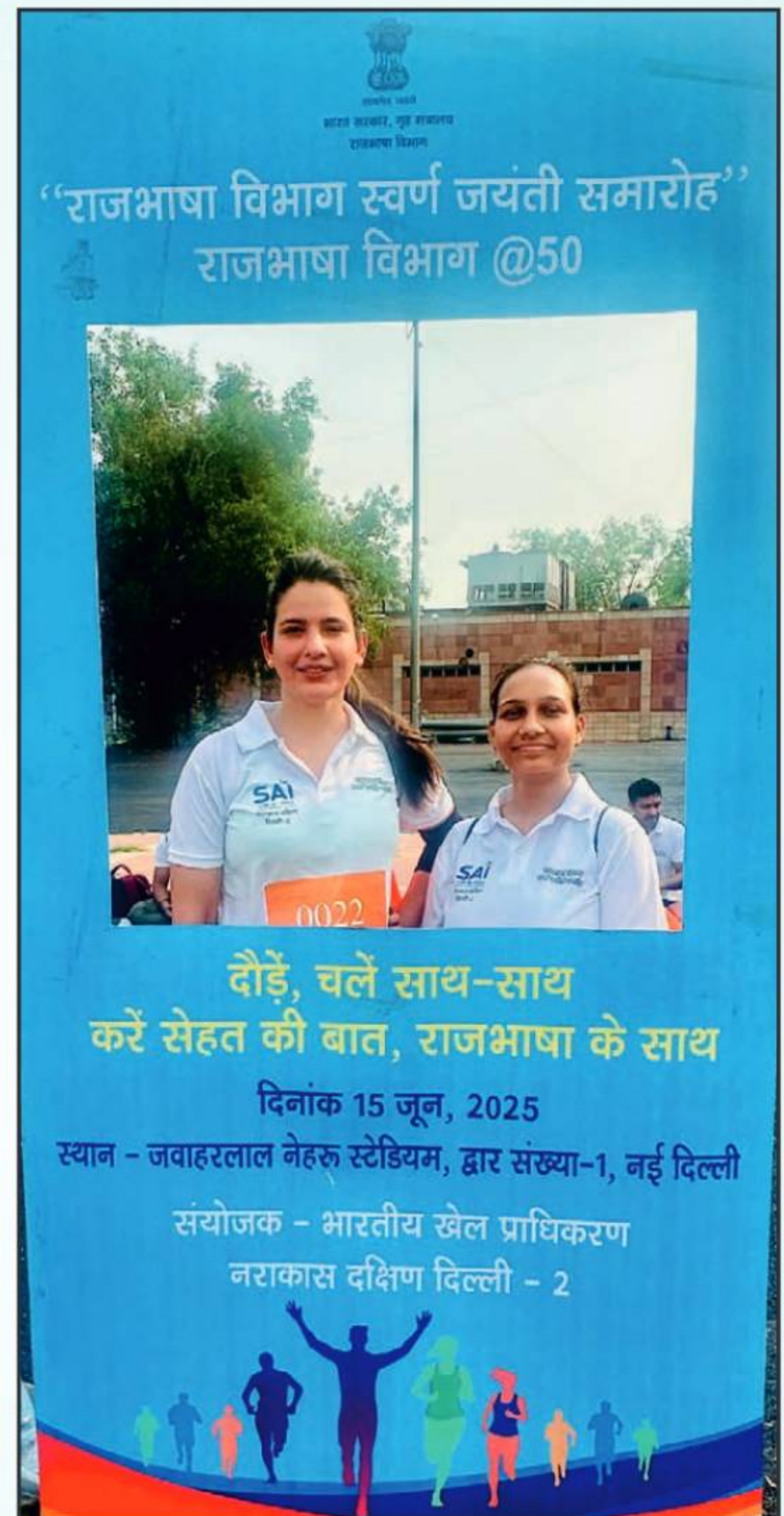
कार्यालय के कार्यक्रमों की कुछ झलकियां



कार्यालय के कार्यक्रमों की कुछ झलकियां



कार्यालय के कार्यक्रमों की कुछ झलकियां





कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, केन्द्रीय व्यय (कृषि, खाद्य एवं जल संसाधन),
आठवां व नवां तल, सीएजी एनेक्सी भवन, 10 बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली- 110002

कार्यालय के कार्यक्रमों की कुछ झलकियां

